TITLE CODE : UPMUL00792

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

लोक पहल

शाहजहाँपुर, रविवार 21 मई 2023 | शाहजहाँपुर से प्रकाशित | वर्ष :2, अंक :13 पृष्ठ :8, मूल्य 2 रुपये

सिद्धरमैया को कर्नाटक की कमान, डीके शिवकुमार बने डिप्टी सीएम

■ **शपथ ग्रहण समारोह में कांग्रेस ने पेश की विपक्षी एकता**

नई दिल्ली एजेंसी। कांग्रेस के दिग्गज नेता सिद्धारमैया ने कर्नाटक के 30वें मुख्यमंत्री पद की शपथ ले ली। इसके अलावा डीके शिवकुमार ने नई सरकार में उप–मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। आठ अन्य विधायकों को सिद्धारमैया मंत्रीमंडल में जगह मिली। कार्यक्रम में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी पहुंचीं। वहीं गैर–भाजपा शासित राज्यों के कई सीएम भी इस मौके पर समारोह में पहुंचे। शपथ ग्रहण के बाद कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया और उपमुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार मंत्री परिषद के अन्य मंत्रियों के साथ बेंगलुरु में 'विधानसौधा' पहुंचे।सतीश जारकीहोली, प्रियांक खड़गे, रामलिंगा रेड्डी और बी.जेड. जमीर अहमद खान ने नव–निर्वाचित कर्नाटक सरकार में मंत्रियों के रूप में शपथ ली है।

कांग्रेस पार्टी ने इस शपथ ग्रहण समारोह में विपक्षी एकता को पेश करने के पूरे प्रयास किए। इस दौरान कई बड़े विपक्षी नेता दिखाई दिए।

शपथ ग्रहण में शामिल होने वाले नेताओं में कई बड़े नाम दिखाई दिए। इस दौरान अशोक गहलोत (राजस्थान), भूपेश बघेल (छत्तीसगढ़) और सुखविंदर सिंह सुक्खू (हिमाचल प्रदेश) जैसे कांग्रेस शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों के अलावा बिहार के सीएम नीतीश कुमार, तमिलनाडु के सीएम एमके स्टालिन और झारखंड के सीएम हेमंत सोरेन भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

इनके अलावा कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, कांग्रेस नेता राहुल गांधी और प्रियंका गांधी वाड्रा, एनसीपी सुप्रीमो शरद पवार, जम्मू–कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला और महबूबा मुफ्ती, बिहार के डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव, रालोद नेता जयंत सिंह, अभिनेता से नेता बने कमल हासन, माकपा नेता सीताराम येचुरी और भाकपा नेता डी राजा शामिल रहे । कांग्रेस ने इस शपथ ग्रहण समारोह को 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले विपक्षी एकता की मजबूती दिखाने की नजर से पेश किया है।

ये युद्ध का दौर नहीं : नरेन्द्र मोदी

क्वाड सम्मेलन में युद्ध और आतंकवाद की निंदा के साथ ही एक साथ आगे बढ़ने पर बनी सहमति

नई दिल्ली एजेंसी : जापान का हिरोशिमा दुनिया की वह जगह है जिसने सबसे पहले परमाणु हमला झेला। इस शहर में क्वाड सम्मेलन का आयोजन हुआ। इस सम्मेलन जापान, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और भारत के राष्ट्राध्यक्षों ने हिस्सा लिया। सम्मेलन के बाद जो साझा बयान जारी हुआ उसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की एक टिप्पणी का खास जिक्र था। क्वाड सदस्यों ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को पीएम मोदी की वह बात याद दिलाई जिसमें उन्होंने कहा था, 'यह युद्ध का दौर' नहीं है। इस बात का जिक्र तब हुआ जब पीएम मोदी ने यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की से मुलाकात की थी। जंग शुरू होने के बाद दोनों नेताओं की यह पहली मुलाकात थी। क्वाड के साझा बयान में पीएम मोदी की उस टिप्पणी को खासतौर पर दोहराया गया है जो उन्होंने उज्बेकिस्तान के समरकंद में की थी। राष्ट्रपति पुतिन के साथ हुई द्विपक्षीय मुलाकात में पीएम मोदी ने उनसे कहा था कि यह युद्ध का दौर नहीं है। दोनों नेता समरकंद में आयोजित शंघाई को–ऑपरेशन सम्मेलन (एससीओ) से इतर मिले थे। क्वाड के बयान में कहा गया है, 'हम मानते हैं कि हमारा दौर युद्ध का नहीं होना चाहिए, हम बातचीत और कूटनीति के लिए प्रतिबद्ध हैं। हम संयुक्त राष्ट्र चार्टर के

तहत ही एक व्यापक, न्यायसंगत और स्थायी शांति का समर्थन करते हैं।

फरवरी 2022 में यूक्रेन के साथ जंग शुरू होने के बाद दोनों नेता पहली बार वार्ता के लिए बैठे थे। पीएम मोदी ने इस दौरान पुतिन से कहा 'युद्ध का युग' खत्म हो चुका है। समरकंद में एससीओ शिखर सम्मेलन में पीएम मोदी की टिप्पणी ने सार्वजनिक रूप से यूक्रेन के खिलाफ रूस की तरफ से शुरू हुई जंग पर भारत की चिंता की तरफ संकेत दिया था। लेकिन भारत ने अभी तक जंग पर रूस की आलोचना नहीं की है। मोदी ने पुतिन के साथ मीटिंग में कहा था, 'मैं जानता हूं कि आज का यह दौर युद्ध का नहीं है। हमने इस मुद्दे पर आपके साथ कई बार फोन पर चर्चा की है कि लोकतंत्र, कूटनीति और संवाद पूरी दुनिया के मसलों को सुलझा सकते हैं।'

क्वाड के साझा बयान में 26/11 के हमलों का भी जिक्र किया गया है। क्वाड के साझा बयान में कहा गया है, 'हम इस तरह के आतंकवादी हमलों के अपराधियों के लिए जवाबदेही को बढ़ावा देने के लिए एक साथ काम करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हम मुंबई मे 26/11 और पठानकोट में आतंकी हमले की निंदा करते हैं और आगे बढ़ने की हमारी प्रतिबद्धता को दोहराते हैं।'

विपक्षी एकता के सुर, केजरीवाल से मिले नीतीश

नई दिल्ली एजेंसी। लोकसभा चुनाव को लेकर विपक्ष ने अपनी तैयारियां तेज कर दी है। इसी क्रम में बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से मुलाकात की। पिछले कुछ हफ्तों में नीतीश कुमार की अरविंद केजरीवाल से यह दूसरी मुलाकात है। इस दौरान उनकी अरविंद केजरीवाल से मुलाकात काफी अहम मानी जा रही है। मुलाकात के बाद अरविंद केजरीवाल ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि केंद्र सरकार के अध्यादेश पर चर्चा हुई और नीतीश कुमार हमारे पक्ष में खड़े हैं। अरविंद केजरीवाल ने एक बार फिर कहा कि अगर सभी दल राज्यसभा में एक साथ आ जाए और अध्यादेश पारित ना हो पाए, तो इससे एक संदेश जाएगा कि 2024 में पीएम नरेंद्र मोदी को हराया जा सकता है।

अरविंद केजरीवाल ने कहा, नीतीश कुमार से मुलाकात में उन्होंने कहा कि केंद्र द्वारा दिल्ली के पक्ष में उच्चतम न्यायालय के आदेश को नकारते हुए अध्यादेश लाने के मुद्दे पर वे दिल्ली की जनता के साथ खड़े हैं। अगर केंद्र इस अध्यादेश को विधेयक के रूप में लाता है तो सभी गैर–बीजेपी दल एक साथ आ जाएं तो उसे राज्यसभा में हराया जा सकता है। अगर ऐसा होता है तो यह संदेश जा सकता है कि 2024 में बीजेपी की सरकार खत्म हो जाएगी।"

पारदर्शिता के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करें पत्रकार: एसपी सिंह बघेल

■ **शासन और पत्रकार मिल कर प्रजातंत्र को मजबूत करे: ब्रजेश पाठक**

■ **इंडो-नेपाल-बंगलादेश मीडिया कांक्लेव-2023 का आयोजन**

लोक पहल

आगरा। प्रेस क्लब आफ आगरा और उत्तर प्रदेश जर्नलिस्ट एसोसिएशन के तत्वावधान में इंडो–नेपाल–बंगलादेश मीडिया कांक्लेव –2023 का आयोजन होटल क्लार्क शिराज में किया गया। इस सम्मेलन में भारत, नेपाल और बंगलादेश से 70 से अधिक पत्रकार शामिल हुए। कांक्लेव का विषय था सामयिक परिदृश्य में मीडिया की चुनौतियां और समाधान।

समारोह के मुख्य अतिथि केंद्रीय विधि एवं न्याय राज्यमंत्री प्रो.एसपी सिंह बघेल ने कहा कि प्रतिस्पर्धा और टीआरपी के चक्कर में कुछ समाचार आधे–अधूरे या तथ्यहीन प्रसारित और प्रकाशित कर दिए जाते हैं, जिससे समाज पर उसका गलत असर पड़ता है लेकिन अब समय है कि इन सबसे बचाव कर अपने छवि को स्वच्छ बनाए रखें। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र के चार खंभे में से यदि एक भी कमजोर होगा तो लोकतंत्र खतरे में आ जाएगा। इसलिए पत्रकार पारदर्शिता के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करें। उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने अपने वीडियो संदेश में कहा कि पत्रकारिता प्रजातंत्र का चौथा स्तंभ है। सत्ता और पत्रकारिता के प्रतिष्ठितजनों को मिल कर दोनों के बीच की दूरी खत्म करके प्रजातंत्र को मजबूत करना होगा।

प्रदेश के उच्च शिक्षा राज्यमंत्री योगेंद्र उपाध्याय ने कहा कि सत्ता और पत्रकार जब समाज के लिए सोचते हैं, तभी समाधान निकलता है। पत्रकार ही जनता को जागरूक करते हैं। मुख्य वक्ता अमर उजाला, नई दिल्ली के सलाहकार संपादक विनोद अग्निहोत्री ने आगरा में हुई भारत–पाक शिखर वार्ता की याद को ताजा करते हुए कहा कि यदि वह वार्ता सफल हो जाती तो अभी तक भारत और पाकिस्तान का नक्शा ही बदल गया होता। पत्रकारिता की चुनौतियों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि बहुत सतर्कता की जरूरत है। सतर्कता के साथ, तथ्यों को परखें और पारदर्शिता रखें, उसके बाद अपने समाचारों को आगे बढ़ाएं। हिंदी पत्रकारिता एक विरासत है, उसे संभालना होगा।

उपजा के प्रदेश अध्यक्ष शिव मनोहर पांडे ने कहा कि देहात के पत्रकारों पर कोई ध्यान नहीं देता। उनकी विषम परिस्थितियों पर भी सभी को संज्ञान लेना चाहिए।

सार्क जर्नलिस्ट फोरम, काठमांडू–नेपाल के अध्यक्ष राजू लामा ने कहा कि भारत एक ऐसा देश है, जो प्रजातंत्र की जननी है। नेपाल और बंगालदेश में भी प्रजातंत्र भारत से ही आया है। भारत की पत्रकारिता से भी विश्व के कई देश प्रभावित हैं। प्रेरणा लेते हैं, इससे हमें शिक्षा लेनी चाहिए। बंगलादेश से आए अब्दुल रहमान ने कहा कि यह आयोजन गौरवशाली रहा है। भारत का प्रजातंत्र भी समृद्धशाली और प्रेरक है, मैं इसे सैल्यूट करता हूं।

स्वागत भाषण प्रेस क्लब ऑफ आगरा के सचिव संजय तिवारी ने दिया। कार्यक्रम का संचालन आगरा के विवेक जैन ने किया। पूर्व में में अतिथियों का माल्यार्पण क्लब के अध्यक्ष अशोक अग्निहोत्री, वरिष्ठ पत्रकार विनोद भारद्वाज, आदर्श नंदन गुप्ता, जसवीर सिंह जस्सी, शिव चौहान, संजय सिंह, रिंकी तोमर, अजेंद्रा चौहान, मनीष जैन, विजय बघेल, समीर कुरैशी, कपिल अग्रवाल, राजकुमार तिवारी, फरहान आदि ने किया।

इस मौके पर वरिष्ठ पत्रकार विनोद भारद्वाज, आनंद शर्मा, ओम ठाकुर जे.एस फौजदार, महंत निर्मल गिरी, स्मिता मिश्रा, डॉ. अनिरुद्ध सुधांशु, राजेश गोयल, वीरेंद्र सक्सेना, प्रदीप गोस्वामी, विक्रम पांडे, नजीर अहमद, राकेश चौहान, संजय अग्रवाल, रमेश बाधवा, संजय अरोरा ,स्वीटी कालरा, राकेश चौहान, दिगंबर सिंह धाकरे, मो. इरफान, सरदार शर्मा, संतोष भगवन, प्रदीप शर्मा, सौरभ उपाध्याय, राजेंद्र तिवारी, दधिबल तिवारी अयोध्या, अनिल विद्यार्थी, हरीश सैनी प्रताप गढ़ राजेश खुराना, गौरव शर्मा, नवीन गौतम आदि को सम्मानित किया गया।

नौकरी की जगह स्वावलंबी बने छात्रः स्वामी चिन्मयानन्द

एस एस ला कालेज में प्रतिभाशाली छात्र छात्राओं को किया गया सम्मानित

लोक पहल

शाहजहांपुर। मुमुक्षु शिक्षा संकुल की ओर से माध्यमिक शिक्षा परिषद की इंटरमीडिएट परीक्षा में टॉप करने वाले छात्र छात्राओं को आयोजित विशाल समारोह में सम्मानित किया गया। समारोह अध्यक्षता पूर्व केंद्रीय गृह राज्य मंत्री स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती ने की और मुख्य अतिथि के रुप में अपर शिक्षा निदेशक, बरेली मंडल, अजय कुमार द्विवेदी रहे।इस मौके पर स्वामी चिन्मयानंद ने कहा कि इंटरमीडिएट उत्तीर्ण करने के बाद छात्र एक ऐसे चौराहे पर खड़े होते हैं जहां उन्हें अपने भविष्य के लिए एक सर्वश्रेष्ठ रास्ता चुनना होता है ऐसे में गुरुजन ही उनका मार्गदर्शन करते हैं । उन्होंने कहा कि प्रतिभाशाली छात्रों को नौकरी के स्थान पर स्वावलंबी बनने का प्रयास करना चाहिए । प्रतिभाशाली छात्रों को समाज और राष्ट्र के निर्माण में अपनी भूमिका सुनिश्चित करनी चाहिए। मुख्य अतिथि अपर शिक्षा निदेशक अजय कुमार द्विवेदी ने सभी प्रतिभाशाली छात्र छात्राओं को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना से हुआ । विधि महाविद्यालय की छात्राओं ने मंचासीन अतिथियों का बैज लगाकर और चंदन तिलक करके स्वागत किया। एसएस कॉलेज की छात्राओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। इस अवसर पर वरिष्ठ प्रधानाचार्य जगदीश प्रसाद मौर्या , स्वामी धर्मानंद कॉलेज के प्राचार्य डा अमीर सिंह यादव, एसएस कॉलेज और ला कालेज के सचिव डा. ए. के. मिश्रा, एस एस कॉलेज के प्राचार्य डा. आर. के. आजाद ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में जनपद के टॉप टेन छात्रों को सम्मानित करने के साथ–साथ माध्यमिक शिक्षा परिषद से संबद्ध 38 विद्यालयों के 380 टॉपर छात्र छात्राओं को भी प्रमाण पत्र एवं उपहार देकर सम्मानित किया गया साथ ही उनके विद्यालय के प्रधानाचार्यों तथा उपस्थित शिक्षकों को भी अंगवस्त्र भेंट कर सम्मनित किया गया । प्रो अनुराग अग्रवाल के संचालन में हुए कार्यक्रम के अंत में विधि महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर जय शंकर ओझा ने आभार व्यक्त किया। इस दौरान एसएसएमवी के सचिव अशोक अग्रवाल विभिन्न विद्यालयों के प्रधानाचार्य व शिक्षक मौजूद रहे।

पं. राजाराम मिश्राः शुचितापूर्ण सियासत और वकालत के युग का अवसान

लोक पहल

शाहजहांपुर। लोकतंत्र सेनानी अधिवक्ता और सियासत के मर्मज्ञ पं. राजाराम मिश्रा शाहजहांपुर में किसी परिचय के मोहताज नहीं थे। जीवन के नौ दशकों में तमाम उतार चढ़ाव को काफी नजदीक से देखने व महसूस करने वाले 'बाबूजी' यानि पं. राजाराम मिश्रा अब हमारे बीच नहीं रहे। ज्येष्ठ के दूसरे मंगलवार को 90 वर्ष की आयु में उनका एक निजी अस्पताल में निधन हो गया। पं. राजाराम मिश्रा ने अपना सम्पूर्ण जीवन लोकतंत्र की रक्षा के साथ–साथ ब्राहम्ण समाज को एकजुट करने में खपा दिया। आपातकाल के दौरान पं. राजाराम मिश्रा ने काफी संघर्ष किया और जेल भी गए। उनके इसी संघर्ष के कारण उन्हें लोकतंत्र सेनानी का दर्जा मिला। जिले की सियासत में भी उनका अच्छा खासा दखल रहा। मंत्री सुरेश खन्ना से पहले भाजपा से शहर विधानसभा सीट से उन्होंने चुनाव लड़ा था। जलालाबाद तहसील के चौरा गांव में जन्में पं. राजाराम मिश्रा ने वकालत के साथ–साथ सियासत और सामाजिक जीवन में भी काफी दखल रखा। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, जनसंघ और भाजपा का झण्डा लेकर जनपद में आगे चलने वाले पं. राजाराम मिश्रा ही हुआ करते थ। 1975–77 के दौरान आपातकाल में तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी के खिलाफ आवाज उठाई और 19 माह तक जेल में रहे। वर्ष 1991 में जब लाल कृष्ण आडवाणी ने राम जन्म भूमि के लिए रथयात्रा निकाली तो पं. राजाराम मिश्रा भी उस रथयात्रा में शामिल हुए और उन्हें गिरफ्तार कर एक माह तक बरेली जेल में रखा गया। जिले के ब्राहम्णों को एकजुट करने के लिए बाबूजी हमेशा प्रयासरत रहे। उन्होंने ब्राहम्ण परिषद का

गठन किया और विसरात में संस्कार केन्द्र की स्थापना की। जिले में आज भले ही हर गली, हर मोहल्लों में भाजपा नेताओं और भगवाधारियों की उपस्थिति दिखाई देती हो लेकिन इसकी नींव पं. राजाराम मिश्रा ने ही रखी थी। जब जिले में भाजपा हो या जनसंघ या फिर आरएसएस का झण्डा और डंडा उठाने वाला कोई नहीं मिलता था तब पं. राजाराम मिश्रा पूरी दमदारी के साथ हिन्दुत्व के लिए संघर्ष दिखाई देते थे। लोकतंत्र सेनानी पं. राजाराम मिश्रा ने सियासत में अपनी जोर आजमाइश की लेकिन आज की राजनीति में वह अपने आपको फिट नहीं बैठाल पाये। उन्होंने अपने जीवन में कुल तीन चुनाव लड़े। 1980 वे भाजपा के टिकट पर शहर विधानसभा से मैदान में उतरे लेकिन कांग्रेस के सादिक अली खां से हार गए। सादिक अली खां के निधन के बाद 1981 में हुए उपचुनाव में भी उन्होंने भाजपा से किस्मत आजमायी लेकिन उन्हें एक बार फिर हार का सामना करना पड़ा। वर्ष 2000 में उन्होंने नगर पालिका चेयरमैन का चुनाव भी लड़ा था लेकिन समाजवादी पार्टी के तनवीर खां के हाथों उन्हें पराजित होना पड़ा। बाबू जी के नाम पर वकालत से लेकर सियासत तक प्रसिद्ध पं. राजाराम मिश्रा के वकालत और सियासत का लगभग 70 साल का जीवन बेदाग रहा। उनके अवसान से जिले की राजनीति में एक ऐसी रिक्तता आई है जिसे आने वाले समय में भरना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है। उनके निधन का समाचार जिसको भी मिला वह अवाक रह गया। जिलाधिकारी ने उनके आवास पर पहुंचकर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किये। उनका अन्तिम संस्कार पूरे राजकीय सम्मान के साथ किया गया। जिसमें राजनीति, वकालत और सामाजिक क्षेत्र के शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति रहा हो जो शामिल न हुआ हो। हमेशा तिरंगे को अपनी आन–बान और शान मानने वाले पं. राजाराम मिश्रा ने उसी तिरंगे में लिपटकर अपने जीवन का अन्तिम सफर पूरा किया। जब–जब जनपद में भाजपा को फर्श से अर्श तक पहुंचने की चर्चा की जाएगी तब तब पं. राजाराम मिश्रा के त्याग, संघर्ष, समर्पण और सहृदयता को जरूर याद किया जायेगा।

एसएस कालेज में एनसीसी कैडेटो को किया गया सम्मानित

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वामी शुकदेवानन्द महाविद्यालय में एनसीसी कैडेटों को सम्मानित किया गया। लेफ्टीनेंट डॉ आलोक कुमार सिंह ने बताया कि विगत 7 से 16 मई तक जवाहर नवोदय विद्यालय में 25एनसीसी बटालियन की ओर से लेफ्टीनेंट कर्नल विजय कुमार मिश्रा के निर्देशन में सीएटीसी कैम्प का आयोजन किया गया। इस कैम्प में जनपद शाहजहांपुर, पीलीभीत एवम बीसलपुर के डिग्री कॉलेज और इंटर कालेजों से लगभग 500 कैडेटों ने विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण के साथ साथ कई प्रतियोगिताओं में भाग लिया।
इस अवसर पर कालेज के प्राचार्य डॉ राकेश कुमार आजाद ने इन प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कैडेटो को पुरस्कृत करते हुए कहा कि एकता और अनुशासन के मूलमंत्र के साथ साथ उन्हे अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कठिन परिश्रम के लिए भी संकल्पित रहना चाहिए। महाविद्यालय आईक्यूएसी के डायरेक्टर डॉ आदित्य सिंह ने सभी पदक विजेताओं को आशिर्वाद दिया। पुरस्कृत होने वाले कैडेटों में डीएसटी के लिए संध्या यादव और अंशुमान को प्रथम, नृत्य और गायन में आकांक्षा मिश्रा को प्रथम, फायरिंग कंप्टीटीशन में सुलोचना और यशित रस्तोगी को प्रथम, पायलेटिंग में गोपाल को प्रथम तथा निबंध लेखन प्रतियोगिता में कनक ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कैम्प में शानदार प्रदर्शन कर कैडेट्स द्वारा महाविद्यालय के लिए पदक जीतने पर महाविद्यालय के सचिव डॉ एके मिश्रा और अन्य शिक्षकों ने हर्ष व्यक्त किया।

आयुर्वेद केवल चिकित्सा पद्धति नहीं बल्कि जीवन शैली है : डा राजीव कुमार

लोक पहल

शाहजहांपुर। गांव का आदमी स्वस्थ क्यों रहता है क्योंकि वह प्रकृति के नजदीक रहता है। वह ऐसी जीवन शैली जीता था कि बीमारियां कम आती थीं। आज कल वह भी धीरे धीरे रासायनिक जाल चक्र में फंसता जा रहा है। उसकी रक्षा आयुर्वेद की जीवन शैली अपनाकर ही कर सकता है। उक्त विचार विनोबा सेवा आश्रम द्वारा जे पी कुटीर छीतेपुर गांव में आयुष द्वार के अंतर्गत आयोजित आरोग्यकर स्वास्थ्य शिविर का शुभारंभ करते हुए जिला आयुर्वेदिक एवं यूनानी चिकित्सा अधिकारी डा राजीव कुमार ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि गांव तक आयुर्वेद की पहुंच बनाने में विनोबा सेवा आश्रम जैसी संस्थाएं खूब

मददगार हो सकती हैं क्योंकि इनका रिश्ता हर घर से बना हुआ है। समाजसेवी शिक्षक हरवंश कुमार ने कहा कि छितेपुर को यह सेवा दिलाने में जे पी सेवा ट्रस्ट की काफी भूमिका है। कार्यक्रम में नन्हें गुप्ता, रघुवीर मौर्य, डोरीलाल, अनुज गुप्ता, बबलू कुमार आदि ने विचार व्यक्त किए। इससे पूर्व डा राजीव कुमार, डा प्रेमचंद्र पटेल, डा आर डी वर्मा, डा संजीव सक्सेना, अशोक श्रीवास्तव आदि को जीवनीय सोसाइटी द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन बिशन कुमार ने किया एवं स्वागत प्रबंधक बृजेंद्र अवस्थी ने और धन्यवाद दिनेश चंद्र ने व्यक्त किया।

महिला एवं बाल विकास मंत्री ने किया विनोबा सेवा आश्रम का निरीक्षण

लोक पहल

शाहजहांपुर। उत्तर प्रदेश की महिला एवं बाल पुष्टाहार मंत्री बेबी रानी मौर्या विनोबा सेवा आश्रम बरतारा भ्रमण पर पहुंची। आश्रम पहुंचने पर उनका स्वागत आश्रम की सलाहकार सीना शर्मा ने किया। उन्होंने विनोबा जी और गांधी जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। विनोबा जीवन प्रदर्शनी का अवलोकन ईशावाश्य भवन में सचिव मोहित कुमार ने कराया। तथागत कुटीर में उनका स्वागत अमर सिंह ने गीत के माध्यम से किया। मुदित कुमार ने विनोबा सेवा आश्रम स्थापना से लेकर अब तक के कामों की जानकारी दी। दिव्या ने महिलाओं के लिए वस्त्र बुनाई सिलाई और कालीन की जानकारी दी। आश्रम संरक्षक विमला बहन ने उन्हें गीता प्रवचन पुस्तक भेंट की।

इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष केसी मिश्रा, महानगर अध्यक्ष अरूण गुप्ता, जिला प्रोबेशन अधिकारी गौरव मिश्रा, मुनीश परिहार, राज कमल बाजपेई आदि उपस्थित रहे। विनोबा सेवा आश्रम के संस्थापक रमेश भैया ने मंत्री बेबी रानी मौर्यो का आभार व्यक्त किया।

सांई शिक्षा निकेतन स्कूल में अधिष्ठान समारोह का आयोजन

हाउस कैप्टन व मॉनीटर को सौंपी गई जिम्मेदारी

लोक पहल

शाहजहांपुर। सांइ शिक्षा निकेतन विद्यालय के शैक्षणिक सत्र 2023–24 का अधिष्ठान व नवीन द्वार का लोकार्पण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि न्यायपीठ बाल कल्याण समिति के पूर्व सदस्य व वरिष्ठ पत्रकार सुयश सिन्हा ने दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। साथ ही विद्यालय में निर्मित नवीन द्वार का फीता काटकर और नारियल फोड़कर लोकार्पण किया।

इस मौके पर विद्यालय की छात्रा इलमा को हेड गर्ल, पियूष हेड ब्वॉय और रेनू को स्टूडेंट्स कोआपरेटिव का कैप्टन बनाया गया। विद्यालय के चारो सदनों गंगा, यमुना, कृष्णा, कावेरी के हाउस कैप्टन और वाईस हाउस कैप्टन तथा कक्षा मानीटर को मुख्य अतिथि सुयश सिन्हा ने बैच पहनाकर पद की जिम्मेदारियां सौंपी। इस अवसर पर श्री सिन्हा ने कहा कि विद्यालय के जिन विद्यार्थियों को जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं उन्हें वे पूरी निष्ठा, ईमानदारी और समर्पण के साथ निभाएं। सदन के कैप्टन के ऊपर विद्यालय के सैकड़ों बच्चों की जिम्मेदारी होती है इसलिए कैप्टन को अपने आचरण, व्यवहार और अनुशासन का विशेष ध्यान रखना चाहिए। इस दौरान विद्यालय के बच्चों द्वारा रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। स्वागत गीत के साथ आरंभ हुए कार्यक्रमों में योगा, डंबल पीटी और लघु नाटिका का प्रस्तुतीकरण काफी प्रभावी रहा। विद्यालय की प्रबंधक नीता श्रीवास्तव ने कहा कि जिन बच्चों को जिम्मेदारियां मिली हैं उनका यह कर्तव्य बनता है कि वे अपनी जिम्मेदारी को पूरी तन्मयता के साथ निभाएं तथा प्रधानाचार्य, शिक्षक और प्रबंधन व विद्यार्थियों के बीच एक कड़ी का काम करेंगी। प्रधानाचार्य रचना बुद्धवार ने सभी नवनियुक्त हाउस कैप्टन व मानीटर को शुभकानाएं दी। आयोजन में विद्यालय की शिक्षक श्वेता सिंह, राजवंत कौर, अंजना सक्सेना, हरिओम, शोएब आलम, हेमंत अग्निहोत्री, मनोज सक्सेना, कृतिका, विभा, सुमौना, रोहित आदि का विशेष सहयोग रहा।

एक्शन में नव निर्वाचित मेयर अर्चना वर्मा

मंत्री सुरेश खन्ना व नगर आयुक्त के साथ किया शहर का निरीक्षण

लोक पहल

शाहजहांपुर। चुनाव में जीत हासिल करने के बाद नव निर्वाचित महापौर अर्चना वर्मा अगले दिन ही एक्शन में नजर आई।उन्होंने वित्त मंत्री सुरेश खन्ना के साथ नगर की पार्किंग व्यवस्था तथा अवैध अतिक्रमण को रोके जाने के लिए जेल के पीछे स्थित पार्किंग स्थल का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने दुकानदारों व अन्य लोगो से अपने वाहन पार्किंग स्थल पर ही खड़े करने का अनुरोध किया गया। साथ ही अतिक्रमण को रोके जाने हेतु नगर क्षेत्र के मुख्य मार्गों एवं दुकानों के आगे ग्रील लगाकर स्थाई समाधान किये जाने के लिए निर्देशित किया। मंत्री सुरेश खन्ना ने भी समस्त दुकानदारों से अपील की कि नगर निगम द्वारा चौराहे– तिराहे पर लगाई गई रेलिंग के अंदर ही दुकानों को लगाए, जिससे जाम की समस्या उत्पन्न न हो। साथ ही निर्देशित किया कि अवैध अतिक्रमण तुरंत हटाया जाए। इसके उपरांत न्यू सिटी ककरा से एफएसटीपी तक निर्मित कराये गए पहुँच मार्ग का निरीक्षण किया व न्यू सिटी ककरा में निर्माणाधीन नगर निगम कार्यालय भवन का निरीक्षण कर निर्माण कार्य की स्थिति को देखा । निरीक्षण के दौरान नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा, अपर नगर आयुक्त एसके सिंह, राजेश वर्मा एवं अन्य अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे।

नई शिक्षा नीति में इग्नू सबसे बेहतर विकल्प : डा. अनिल मिश्रा

पुवायां में विवेकानंद महाविद्यालय में जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन

लोक पहल

शाहजहाँपुर। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में दो या अधिक डिग्री एक साथ करने की दी गयी सुविधा का लाभ उठाने के लिए इग्नू सबसे बेहतर विकल्प है। यह विचार इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र लखनऊ के एडिशनल डायरेक्टर डॉ अनिल कुमार मिश्र ने व्यक्त किए। डॉ मिश्र स्वामी विवेकानंद पीजी कॉलेज, पुवायां में आयोजित विद्यार्थी जागरूकता कार्यक्रम में उपस्थित बीएड विद्यार्थियों को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि इग्नू विद्यार्थियों के सतत शिक्षा और कौशल विकास के लिए सबसे बेहतर उपलब्ध विकल्प है। रेगुलर माध्यम से पढ़ाई करते हुए साथ मे ही इग्नू से पढ़ कर विद्यार्थी अपना शैक्षिक और व्यावसायिक विकास कर सकते हैं। इग्नू के जुलाई 2023 सत्र के लिये प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ है जिसकी अंतिम तिथि 30 जून है। अनुसूचित जाति और जनजाति के विद्यार्थी

इग्नू में बी ए, बी एस सी और बी कॉम में निः शुल्क प्रवेश ले सकते हैं।इग्नू अध्ययन केन्द्र स्वामी शुकदेवानन्द कॉलेज शाहजहांपुर के समन्वयक डॉ प्रभात शुक्ल ने कहा कि इग्नू के मध्यम से आनलाइन और दूरस्थ दो माध्यमों से पाठ्यक्रम् संचालित हैं। स्वामी विवेकानंद पीजी कॉलेज के प्राचार्य डॉ मोहित निगम ने कहा कि शिक्षा जीवन को जीवंत बनाए रखने की प्रक्रिया है इसलिए मनुष्य को निरंतर शिक्षा के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन अखिलेश तिवारी ने और अंत में सभी का आभार बी एड के विभागाध्यक्ष डॉ राजेश नारायण ने व्यक्त किया। इस अवसर पर रामबाबू, भुवनेश कुमार, सुभाष चंद्र, कीर्ति गुप्ता ,संजय कुमार सहित सभी शिक्षक शिक्षिकाएं और बी एड के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

न्यायाधीशों की पारदर्शी नियुक्ति के बिना निष्पक्ष न्याय संभव नहीं : प्रो. अवस्थी

एसएस लॉ कालेज की ओर से दो दिवसीय वेबिनार का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वामी शुकदेवानन्द विधि महाविद्यालय की ओर से दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबिनार ''उच्चतम न्यायालय एवं उच्च न्यायालयों में न्यायाधीशों की नियुक्ति की कोलेजियम प्रणाली की युक्तिसंगतता'' पर आयोजित किया गया। वेबिनार के समापन सत्र के मुख्य वक्ता पूर्व विभागाध्यक्ष एवं संकायाध्यक्ष, विधि संकाय लखनऊ विश्वविद्यालय प्रो0 ऐके अवस्थी ने भारतीय संविधान के अनुच्छेद 124(2) के अन्तर्गत प्रावधान एवं न्यायिक निर्णयों एसपी गुप्ता बनाम भारत संघ, 1981 सुप्रीम कोर्ट एडवोकेट आन रिकार्ड 1993 और इन0री0 कोर्ट विल 1998 के आलोक में राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग 2014 एवं 99वें संविधान संशोधन की विस्तार पूर्वक विवेचना की। उन्होंने कहा कि न्याय पालिका की निष्पक्षता तभी सम्भव है जब न्यायाधीशों की नियुक्ति पारदर्शी तरीके से की जाये।

विशिष्ट वक्ता असि. प्रो0 विधि संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय डॉ विकेश राम त्रिपाठी ने कहा कि न्यायाधीशों नियुक्ति के संदर्भ में जो आयोग 2014 में लाया गया था उसके कुछ प्रावधानों को असंवैधानिक घोषित नहीं किया जाना चाहिए था। न्यायालय की निष्पक्षता तभी सुनिश्चित की जा सकती है कि जब उच्चतम न्यायालय एवं उच्च न्यायालय में न्यायाधीशों की नियुक्ति निष्पक्ष तरीके से हो। इसके अतिरिक्त श्रोताओं द्वारा पूछे गये प्रश्नों का समुचित उत्तर देकर न्यायाधीशों की नियुक्ति के बारे में उनकी आशंकाओं को दूर किया।

विशिष्ट वक्ता एसोसिएट प्रो0 विधि संकाय, उत्तरांचल विश्वविद्यालय डॉ अंजुम परवेज ने कहा कि यदि कोलेजियम प्रणाली ईमानदारी पूर्वक बिना किसी प्रभाव के न्यायाधीशों की नियुक्ति निष्पक्षता से करें तो न्यायालय की स्वतन्त्रता को बनाये रखा जा सकता है। प्राचार्य, हिन्दू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखनऊ डॉ मनोज कुमार पाण्डेय ने सभी वक्ताओं के सुनने के बाद अपना निष्कर्ष दिया कि न्यायपालिका की स्वतन्त्रता को निष्पक्ष बनाये रखने के लिए न्यायालयों में न्यायाधीशों की नियुक्ति भेद–भाव रहित तरीके से होनी चाहिए। कार्यक्रम का संचालन रंजना खण्डेलवाल ने किया एवं आभार एसएस लॉ कालेज के प्राचार्य डा0 जय शंकर ओझा ने व्यक्त किया।

मंत्री सुरश खन्ना ने महापौर व पार्षदों का किया अभिनंदन

लोक पहल

शाहजहांपुर। प्रदेश सरकार के वित्तमंत्री सुरेश कुमार खन्ना ने नवनिर्वाचित महापौर अर्चना वर्मा और भाजपा के पार्षदों को सम्मानित किया। शहर के एक होटल में नगर निगम की स्वच्छता प्रभारी अल्पना श्रीवास्तव व डॉ आकाश श्रीवास्तव के संयोजन में आयोजित कार्यक्रम में सभी को माल्यार्पण व अंगवस्त्र भेंटकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि सुरेश कुमार खन्ना ने कहा कि यह मेरा प्रयास है कि यह जनपद हर क्षेत्र में पहले स्थान पर रहे। महापौर अर्चना वर्मा ने सभी पार्षदों से पूरी ऊर्जा के साथ सहयोग देने की अपील की। समारोह को डॉ यूडी कपूर, डॉ राकेश दीक्षित, डॉ डीएस माथुर, डॉ अनिल सूद व सेंट्रल बार एसोसिएशन के अध्यक्ष ब्रजेश वैश्य ने भी सम्बोधित किया।

कवि डॉ इन्दु अजनबी के संचालन में हुए समारोह में प्रमुख रूप से एमएलसी डॉ सुधीर गुप्ता, कोऑपरेटिव बैंक अध्यक्ष डीपीएस राठौर, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष वीरेन्द्र पाल सिंह यादव, भाजपा महानगर अध्यक्ष अरुण गुप्ता, डॉ दीपा सक्सेना, पूनम मेहरोत्रा, अमन सक्सेना, अमित भटनागर, ज्ञानदेव गुप्ता, डॉ दीपा दीक्षित, अमरीश सक्सेना, अमित अस्थाना, वैभव खन्ना, सुरेन्द्र वर्मा, अनूप सिंह, सुनील सैनी, विकास टण्डन, विजय तुली, सुधीर पाण्डेय, शिल्पी गुप्ता, क्षमा वर्मा, अनिल मालवीय, सुरेन्द्र नाथ, विकास कश्यप, विनीता गुप्ता, हेमा अग्रवाल, दिव्यांग सिंघल, किशोर गुप्ता, नलिनी ओमर, डॉ एके श्रीवास्तव, शिल्पी गुप्ता समेत काफी संख्या में गणमान्य जन लोग उपस्थित रहे।

/ सम्पादकीय /

सिद्धरमैया: कर्नाटक के नए 'किंग'

कर्नाटक में कांग्रेस को मिली भारी जीत के बाद पार्टी में कौन बनेगा कर्नाटक का किंग को लेकर अपने–अपने दावे पेश किये जाने लगे। एक ओर जहां पूर्व मुख्यमंत्री व पार्टी के अनुभवी नेता सिद्धरमैया मुख्यमंत्री पद के लिए अपना दावा पेश कर रहे थे तो वहीं दूसरी ओर कांग्रेस के जुझारू संकट मोचक डीके शिवकुमार भी मुख्यमंत्री की रेस में शामिल थे। पार्टी के सामने दोनो नेताओं को साधने की समस्या थी लेकिन कांग्रेस ने गहन मंथन के बाद आखिरकार कर्नाटक की कमान सिद्धरमैया को सौंपने का निर्णय कर लिया और इसे उचित भी माना जा रहा है।

कर्नाटक के दो कद्दावर नेताओं सिद्धरमैया और डीके शिवकुमार ने मुख्यमंत्री पद की दावेदारी पेश की थी। कर्नाटक विधानसभा चुनाव जिताने में दोनों की अहम भूमिका मानी जा रही है। ऐसे में स्वाभाविक ही पार्टी आलाकमान के सामने मुश्किल थी कि वह दोनों में से किसे मुख्यमंत्री पद की जिम्मेदारी सौंपे।

सिद्धरमैया अनुभवी नेता हैं, इससे पहले पांच साल तक मुख्यमंत्री रह चुके हैं। उनका कार्यकाल संतोषजनक रहा है। फिर कर्नाटक में उनका बड़ा जनाधार है। इस चुनाव में भी कांग्रेस अगर अल्पसंख्यक, अन्य पिछड़ी जातियों और दलितों को अपने पक्ष में जोड़ सकी, तो उसके पीछे सिद्धरमैया का प्रभाव ही काम आया। आम चुनाव नजदीक आ रहे हैं, ऐसे में सिद्धरमैया को नाराज करना कांग्रेस के लिए परेशानी मोल लेना साबित हो सकता था। फिर चुनाव घोषणापत्र में कांग्रेस ने जो पांच बड़े वादे किए हैं, उन्हें मंत्रिमंडल की पहली ही बैठक में पूरा करने का संकल्प है। इसके लिए दृढ़ राजनीतिक नेतृत्व और कुशल आर्थिक संयोजन बहुत जरूरी है। इस मामले में सिद्धरमैया ही कारगर साबित हो सकते हैं। आर्थिक मामलों में सिद्धरमैया के गणित और अर्थ को मैनेज करने का लोहा विपक्षी नेता भी मानते रहे हैं। वहीं दूसरी ओर डीके शिवकुमार पार्टी के समर्पित कार्यकर्ता हैं, उनकी निष्ठा और लगन में कोई कमी नहीं। इस चुनाव में उनकी मेहनत नतीजों में भी परिवर्तित हुई। मगर सबसे बड़ी अड़चन उनके साथ यह है कि उन पर कर चोरी और वित्तीय अनियमितताओं के गंभीर आरोप हैं, जिसके चलते उन्हें जेल भी जाना पड़ा था। अगर कांग्रेस उन्हें मुख्यमंत्री पद पर बिठा देती और आयकर विभाग और प्रवर्तन निदेशालय सक्रिय होकर उन्हें फिर गिरफ्तार कर ले जाते, तो पार्टी के लिए नई मुसीबत खड़ी हो जाती।

इसलिए चुनाव नतीजे आने के तुरंत बाद से ही पार्टी में उन्हें लेकर हिचक साफ दिखाई दे रही थी, पर डीके शिवकुमार अपनी दावेदारी पेश करने और दबाव बनाने का प्रयास करते रहे। मगर पार्टी ने उचित ही व्यावहारिक पहलुओं पर ध्यान देते हुए उन्हें उप–मुख्यमंत्री का पद दिया। इससे उनके सम्मान में कहीं से कोई कमी नहीं आने पाई है। कांग्रेस के लिए यह कोई पहला मौका नहीं था, जब दो बड़े नेता मुख्यमंत्री पद की दौड़ में शामिल थे और उनके बीच उसे संतुलन बिठाना था। छत्तीसगढ़ में भी यही संकट खड़ा हो गया था, तब आधे–आधे कार्यकाल के लिए भूपेश बघेल और टीएस सिंह देव के बीच फार्मूला तय किया था। राजस्थान में सचिन पायलट को उप–मुख्यमंत्री बनाया गया।

अभी हिमाचल प्रदेश में भी इसी तरह मुख्यमंत्री पद की दौड़ शुरू हुई, तो दो प्रभावशाली नेताओं में मुख्यमंत्री और उप–मुख्यमंत्री पदों का बंटवारा किया गया। नेतृत्व में तनाव आखिरकार राज्य की जनता के हितों को प्रभावित करता है। फिलहाल कर्नाटक में सिद्धरमैया के नेतृत्व में सरकार ने कामकाज संभाल लिया है उनके नायाब के रूप में डीके शिवकुमार सरकार चलाने में उनकी मदद करने के लिए तत्पर हैं अब देखने वाली बात यह है कि यह दोनो नेता आपस में कितना ताल मेल बिठाकर कर्नाटक की जनता की भलाई के लिए काम कर पाएंगे या पावर गेम में उलझकर रह जाएंगे।

गुरू-शिष्य के बीच बदलते संबंध

रानी प्रियंका
बहादुरगढ़ हरियाणा

विद्या के समान आंख नहीं। विद्या के बिना मनुष्य अंधा हैं। शिक्षा मनुष्य के जीवन में एक महान मशाल बनकर आती है,जिसको रोशनी में मनुष्य अपना भला–बुरा समझ सकता है। साथ ही पुस्तकों के माध्यम से दूसरों के अनुभव और ज्ञान को प्राप्त कर मनुष्य अपनी कल्पना को साकार करता है। शिक्षा अज्ञानता के अंधकार को नाश करती है और ज्ञान ज्योति फैला कर सफलता का मार्ग प्रशस्त करती है। भारतीय प्राचीन मनीषियों का यह कथन अक्षरशः सत्य और सार्थक प्रतीत होता हैं 'तमसो मा ज्योतिर्गमय।'

लेकिन यह कैसे संभव हो सकता है ?यह एक विचारणीय विषय के रूप में हमारे सामने उपस्थित हैं,कोई छात्र –शिक्षकों के बीच वह मधुर संबंध आज नही रहा जो भारतीय परंपरा से चला आ रहा था। आज सर्वत्र नैतिक पतन हो चुका है। स्वार्थ की भावना से ग्रसित अध्यापक और शिष्य अपने आदर्श को भूल चुके हैं। छात्र या विद्यार्थी किसी देश के भविष्य होते है,क्योंकि वे ही देश के भावी पीढ़ी के अगुआ या प्रतिनिधि होते हैं। उन्हीं के हाथों में देश की बागडोर आने वाली होती हैं। इस परिस्थिति में यह स्वभाविक है की किसी देश के विकास में वहाँ के छात्रों की भूमिका महत्वपूर्ण हैं। लेकिन यह सब कुछ निर्भर करता है अध्यापक के ऊपर। अध्यापक ही छात्र के पथप्रदर्शक और सही मार्गदर्शक होते हैं। छात्र तो कच्चे मिट्टी के घड़े के समान है,जिसे शिक्षक जिस रूप में चाहे जिस तरह

चाहे,बना सकते हैं। जीवन के भविष्य की नींव तो अध्यापक ही डालते हैं। अध्यापक की महत्ता प्रदर्शित करने के लिए कहा गया है।

गुरु गोविंद दोउ खड़े,काके लाँगू पाँय। बलिहारी गुरु आपनो,जिन गोविंद दियो बताए।।

लेकिन आज गुरु गुड़ और चेला चीनीष्वाली कहावत चरितार्थ हो रही। इस समय चतुर्दिक वातावरण अत्यंत दूषित हो गया हैं। सामाजिक जीवन में तरह तरह के अपराधों का अनायास घटित होना आम बात है। छात्र को प्राचीनकाल में अन्तेवासी कहा जाता था छात्र गुरु के आश्रम में अध्ययन करने जाते थे। गुरु के अनुशासन में अनुशासित जीवन व्यतीत करते हुए ज्ञानर्जन करते थे। छात्रों के सही व्यक्तित्व के निर्माण के लिए न केवल उनके जीवन से जुड़ी शिक्षा अनिवार्य हैं बल्कि शिक्षा काल में हमेशा रचनात्मक क्रिया – कलापों में उनका व्यस्त रहना भी आवश्यक हैं। प्रायः देखा यही जा रहा है किताबी अध्ययन के अतिरिक्त आज छात्रों को किसी प्रकार न तो रचनात्मक व्यस्तता है और न उसके बारे में उन्हें सम्यक दिशा –निर्देश ही मिल पाता हैं। इसके लिए मुख्य रूप से अध्यापक ही जिम्मेवार हैं। अतः आज युग की पुकार को ध्यान में रखकर प्राचीन भारतीय आदर्श के अनुरूप शिक्षा की व्यवस्था की व्यवस्था की आवश्यकता हैं,जिससे छात्र और अध्यापक के बीच एवं गुरु और शिष्य के बीच प्राचीन आदर्शानुरूप संबंध स्थापित हो सके। तभी अनुशासित और विवेकशील छात्र स्वयं विकास कर राष्ट्र को विकास के मार्ग पर प्रशस्त करने से सफल हो सकते हैं और देश जगदगुरु की गरिमा से पुनः गौरवान्वित हो सकेगा।

ईश्वर के नजदीक

आध्यात्म

छात्र जीवन में स्वामी रामतीर्थ को दूध बड़ा प्रिय था। वह एक दुकान से प्रतिदिन दूध लिया करते थे। एक बार पैसों की तंगी होने के कारण एक महीने के दूध का दाम दुकानदार को नहीं दे पाए। इसके कुछ ही दिनों बाद उनकी लाहौर के एक कॉलेज में अध्यापक के पद पर नियुक्ति हो गई और उन्हें नियमित वेतन मिलने लगा। तब वह प्रतिमाह दुकानदार को मनीऑर्डर से रकम भेजने लगे।

वह उनसे हाथ जोड़कर बोला, ''आपसे एक ही महीने का पैसा आना था, लेकिन आप तो पिछले कई महीनों से पैसे भेज रहे हैं। मैं आपके बाकी के सभी जमा पैसे लौटा रहा हूं और आगे से आप पैसे न भेजा करें।'' स्वामी जी ने मुस्कुराते हुए कहा, ''भाई, मैं आपका बहुत अहसानमंद हूं। आपके कारण ही मेरा स्वास्थ्य अच्छा रहा और मैं यहां तक पहुंच पाया हूं। कर्ज तो उतर जाता है लेकिन अहसान कभी नहीं उतरता। जो व्यक्ति जितना लेते हैं, उतना नाप–तोल कर देते हैं, तो वे मनुष्य हैं। जो थोड़ा लेकर उसका अहसान मानते हैं और उसे बिना नाप–तोल के चुकाने का प्रयास करते हैं, वे ईश्वर के निकट पहुंचते हैं।

माता का सम्मान-सांस्कृतिक विचारणा

डा. कनक रानी
पूर्व प्राचार्य

माता का सम्मान वैश्विक स्तर पर अनुकरणीय सनातन संस्कृति का अनुपम आदर्श है। इस धरा पर मां का सर्वोत्कृष्ट पद है। धर्म कोई भी हो, मातृ–महिमा के सर्वोच्च स्वर सर्वत्र मुखरित हु,। उसकी सृजनशीलता से सृष्टि ने अपनी निरंतरता को बनाए रखा। सृजन की क्षमता, चारित्रिक निर्माण और दिशा दर्शन से मां ने मानवता को उपकृत किया है। गर्भधारण, पालन पोषण और संरक्षण के कारण वह पिता से भी अग्रणी दिखाई देती है– सहस्त्रं तु पितृन् माता गौरवेणातिरिच्यते। जीवन में मां के अगणित योगदानों के दृष्टिगत सनातन संस्कृति ने उद्घोश किया कि–नास्ति मातृसमो गुरूः– महाभारत/ अनुशासन पर्व/105–14

बालक के विनिर्माण–विकास में महती भूमिका ही माता को सम्माननीय बनाती है, श्रद्धा में नतमस्तक करती है। वह जन्मदात्री है। पालनकर्त्री है। वात्सल्यमयी है। मां के आंचल में शिशु पोषित होता है। मां की उंगली थामकर गतिशील होता है। मां के स्वरों से ही भाषा सीखता है। उसकी स्नेहिल छाया में पलता– बढ़ता है। मां को परिभाषित करने का शब्दों में सामर्थ्य नहीं। मां में संतति के प्रति अथाह स्नेह है, निःस्वार्थ त्याग है, अनन्य समर्पण है। यही नहीं, संतान के लालन पालन में– व्यक्तित्व निर्माण में समर्पित मां अपनी समस्त आवश्यकताओं–इच्छाओं को गौण कर देती हैं। मां का प्रेम सर्वातिशायी है, फलतः वैदिक वाङमय ने भी मातृ–स्तवन किया। यहां मातृशक्ति को देववत् सम्मान्य उद्घोशित किया गया– मातृ देवो भव– तैत्तिरीय उपनिषद्/ शिक्षावल्ली/ अनुवाक 11

यदि सांसारिक संबंधों की बात की जाए तो मां और संतान के मध्य सर्वाधिक पावनता–आत्मीयता का बंधन है। शिशु के लिए मां की गोद अतीव सुखदायी है। यहां प्यार दुलार का सतत प्रवाह है। संतति को सुयोग्य बनाने का अद्भुत सामर्थ्य है मां में। उसकी सहृदयता सकल लोक में अतुलनीय ही है– मातुर्लोके मार्दवं साम्यशून्यं।

निस्सन्देह, मां की महिमा अभिव्यक्ति का नहीं, अनुभूति का विषय है। मां के अनन्त उपकार हैं। जीवन उसका ऋणी है। मां के सान्निध्य में वह संस्कारित होता है। दया– करूणा– ममता आदि नैतिक मूल्यों से शिक्षित होता है। मानवता से उपदिष्ट होता है। पारिवारिक चेतना से संयुक्त होता है।

मातृ दिवस पर विशेष

मां की शिक्षाओं और संस्कारों की आधारभूमि पर बालक में जीवन के उच्च दृष्टिकोण का अंकुरण होता है। जन्म से पूर्व ही यथेष्ट गुणों को संजोने में– ज्ञान और कौशल का समावेश करने में मां ही सक्षम है। संसार में अर्थवत्ता युक्त जीवन जीने के संदर्भ में शिशु सर्वप्रथम मां से ही अनुप्राणित होता है। आदिकवि वाल्मीकि की दृष्टि में मां स्वर्ग से भी अधिक गरिमामयी है– जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। महर्षि वेदव्यास कृत महाभारत में माता भूमि से भी गुरुतर बतायी गयी– माता भूमेः गुरुतरा।

सुभाषित है कि– मातृपितृ कृताभ्यासो गुणितामेति बालकः। बालक में गुणवत्ता का समावेश माता–पिता के अनवरत प्रयासों से ही संभव है। शतपथ ब्राह्मण में उल्लेख किया गया कि– मातृमान पितृमान आचार्यवान पुरुषो वेद। उल्लेखनीय है कि गुरुत्रय अर्थात् माता– पिता और आचार्य में माता प्रथम परिगणित है। यहां मातृमान शब्द से अभिप्राय है कि जिसकी मां प्रशंसनीय आचरण से युक्त है, धर्म में निष्ठा से संयुक्त है, वैदुष्य से परिपूर्ण है, वही शिशु मातृमान है– प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य सः मातृमान– सत्यार्थ प्रकाश। महर्षि दयानन्द के अनुसार ऐसे बालक में शिक्षित और गुणवान होने की अपेक्षाकृत अधिक संभावनाएं निहित हैं। मां पुत्र–पुत्री को सन्मार्ग पर संचरण हेतु प्रेरित करती है, संतान के आचरण को उदात्त बनाती है, स्वाभिमान आदि गुणगण से संयुक्त करती है। चरित्र निर्माण से लेकर जीवन की सफलता तक की यात्रा में मां की विशेष भूमिका है।

मां के आंचल से बड़ा संसार में कोई स्थान नहीं। उसके समान कोई सहारा नहीं। उसकी छाया में ही समस्त सुख हैं। जीवन में उसके समान कोई रक्षक नहीं। इस संसार में माता के समान कोई प्रिय नहीं। नास्ति मातृसमा छाया नास्ति मातृसमा गतिः। नास्ति मातृसमः त्राणः नास्ति मातृसमा प्रिया।। महाभारत/शान्ति पर्व/266–30। अस्तुए यह प्रकरण नारी सशक्तिकरण की अपरिहार्यता की ओर भी ध्यान आकृष्ट करता है। भावी पीढ़ी को सबल बनाने के लिए नारी की स्वस्थ, शिक्षित व सशक्त स्थिति के निमित्त सार्थक प्रयास वांछित हैं। इसके अतिरिक्त माता की आज्ञा का पालन करना, दुराचरण से दूरी बनाना, अच्छा नागरिक बनना संतति का भी कर्तव्य है। अन्ततः उसके उपकारों को संज्ञान में लेते हु, सत्पथ पर गतिशील हों, यही मातृशक्ति के प्रति कृतज्ञता होगी।

रेखा शाह आरबी
बलिया

चमचा बिनु बेस्वादी बेस्वादी दुनिया

व्यंग्य

हम हिंदुस्तानियों को दो चीजें काफी पसंद है। एक चाय और दूसरा चमचे ..चाय तो अंग्रेजों की देन है लेकिन हम लोगों ने उसे बहुत ही प्रेम से अपने जीवन में आत्मसात कर लिया लेकिन चमचे देसी उपज है देसी पैदावार है। खालिस हिंदुस्तानी उपज इसलिए चाय से ज्यादा चमचे हम लोगों को पसंद है। हमारा चमचा प्रेम एकदम अव्वल दर्जे का है। हम हिंदुस्तानियों का चमचा प्रेम इतना है जितना लैला को मजनू से.. हीर को रांझा से ..और सोनी को महिवाल से भी नहीं रहा होगा। इन सभी का प्यार किसी न किसी कालखंड तक ही सीमित रहा लेकिन हमारा चमचा प्रेम युगो युगांतर जन्म जन्मांतर से है।

दुनिया की हर एक चीज से ऊपर सबसे ज्यादा हम लोगों को अपने चमचों से प्रेम है। हम एकबारगी बिना ऑक्सीजन के जिंदा रह सकते हैं। बिना पानी के जिंदा रह सकते हैं बिना भोजन के जिंदा रह सकते हैं। पर चमचों के बिना जिंदा रहना हिंदुस्तानियों का असंभव है। चमचे हमारी रक्त वाहिनियों में निर्बाध रूप से जीवन संजीवनी बनकर विचरण करते रहते हैं। चमचे भी सोचते होंगे वाह.. ईश्वर किस ग्रह पर भेज दिए हो और अपने भाग्य पर इठलाकर भांगड़ा करते होंगे। हम हिंदुस्तानी इतने बड़े चमचों के कद्रदान है कि चमचों को अपने भाग्य पर इतराना तो बनता है हमारी कद्रदानी देखनी हो तो कोई सूक्ष्म दृष्टि की आवश्यकता नहीं है बस चारों तरफ एक बार हल्का सा नजर मार लीजिए आपको चमचा प्रेम का वृहद विस्तृत संसार नजर आएगा।

आप जहां देखे वहां चमचे नजर आएंगे घर में ,ऑफिस में, मॉल में, शहर में, गांव में ,गली में, नुक्कड़ पे, किचन में, ड्राइंग रूम में, राजनीति में , इतिहास में, धरती के हर कोने में चमचे विद्यमान है । चमचे वर्तमान में भी हैं चमचे भूत में भी थे और चमचे भविष्य में भी रहेंगे। इनका भविष्य आज भी हमारे देश में पूर्णत उज्जवल है और कल भी इनका भविष्य उज्जवल ही रहने की संभावना है इसमें कोई शक सुबहा नहीं है। अगर आपको चमचों पर भरोसा नहीं है तो आप जीवन में बहुत कुछ बड़ा नहीं कर सकते बड़ा करने के लिए चमचा बहुत जरूरी वस्तु है सारे बड़े कार्य चमचों के द्वारा ही सिद्ध किए जाते हैं।

सावन में जिस प्रकार पानी बिना सब सूना रहता है। वैसे ही भारतीयों का जीवन चमचों के बिना सूना रहता है। चमचे है तो हर तरफ मंगल ही मंगलमय है। हमारे देश में चमके तो भोजन का वह नमक है जिनके बिना कितना भी मजेदार सजा धजा हुआ धाली का खाना जिंदगी में कुछ मजा नहीं देता बल्कि बेमजा बेस्वादु दिन रतिया सजना वाला हो जाता है। तो जिंदगी का असली स्वाद चमचे ही है। चाहे आप अपना सर कितना भी दाएं बाएं हिलाते रहिए। लेकिन उनका ना कुछ भी होना या बिगड़ना है उनकी सीट पूरी तरह से आरक्षित है।

इस धरती पर चमचों से ज्यादा उपयोगी वस्तु ना कोई हुई है ना होने की संभावना है। सभी प्रकार के चमचे उपयोगी होते हैं सुंदर, ढंग के, बेढगे, टूटे–फूटे, आड़े –तिरछे सभी प्रकार के चमचों की अपनी अपनी अहमियत होती है। अब यह आपकी कला के ऊपर है कि आप अपने चमचों का कैसे इस्तेमाल करते हैं। कितना भी चमचा टूट जाए लेकिन नमक के बरनी में से नमक निकालने के काम तो आ ही जाता है। अतः आप भी यदि चमचा बनना चाहते हैं तो जल्दी जल्दी करिए कहीं ऐसा ना हो बीत न जाए

कमाई

नीना सिन्हा
पटना, बिहार

"यह खबर पढ़ी आपने? टॉप सिक्योरिटी वाले एक अपार्टमेंट के फ्लैट में किन्नरों का जबरन घुसने का प्रयास! अनझटके दरवाजा खोल चुकी महिलाओं ने हड़बड़ाहट में बंद करने की कोशिश करते हुए प्रश्न किया, "गार्ड्स के होते हुए तुमलोग ऊपर कैसे आये?"

ढीठ लहजे में उत्तर मिला, "पुलिस भी नहीं रोकती हमें। सुना है यहाँ बच्ची हुई है। उसे आशीर्वाद देने दो, बस पाँच हजार दे देना", कहते हुये अंदर घुसने की कोशिश में प्रवेश–द्वार को किन्नरों ने धक्का दिया।

बच्ची की माँ और नानी ने द्वार बंद करने की असफल कोशिश करते हुए कहा, "बाहर खड़े रहो, पैसे मिल जायेंगे।" तभी एक किन्नर ने बाहरी अरली को चौखट के भीतर इस प्रकार अड़ा दिया कि दरवाजा अंदर से बंद न हो सके। मानसिक दवाब बनाए रखने के लिए धक्का–मुक्की करते रहे..।

नानी के मोर्चा संभालने पर बच्ची की माँ ने नाना को दफ्तर में फोन कर वस्तुस्थिति बताई। उन्होंने गार्ड्स को फोन करके डाँटा, "दो महिलाएँ अकेली हैं और किन्नर गैंग गुंडागर्दी करने पर आमदा है! हटाओ उन्हें, वरना पुलिस को सूचित करुँगा।"

"सर! उनसे कौन उलझे? रोकने जाओ तो कपड़े उघाड़कर सबको शर्मसार कर देते हैं। अंततः गार्ड्स ने ही आकर उन्हें वहाँ से हटाया।'' "बेचारे बहिष्कृत हैं। समाज के नियमानुसार आजीविका के लिए यह सब करते हैं", दूसरे सज्जन के विचार थे। " पर इससे उन्हें महिलाओं को घर में अकेला पाकर धक्कामुक्की करने का अधिकार तो नहीं मिल जाता। बुद्धिविहीन नहीं हैं वे। आसान कमाई के फेर में असली किन्नरों के साथ ढेरों नकली किन्नर पैदा होंगे, कुछ अपराधिक प्रवृत्ति के भी हो सकते हैं। परिणाम सोचिए य पुरुष माफिक शरीर, वेशभूषा स्त्री की, चेहरे पर सस्ता मेकअप कर तालियाँ ठोकने वालों को हम और आप असली किन्नर ही मानेंगे न..?"

"सोच दुरुस्त है आपकी", दूसरे सज्जन बोले। "पुरानी मान्यता है कि इनकी दुआएँ फलीभूत होती हैं। लकीर के फकीर हमलोग शुभ अवसरों पर गाढ़ी कमाई के हजारों रुपए न्योछावर कर, उनके आलस्य को निरंतर बढ़ावा देते रहे हैं। आजकल रोजगार के अवसर मिले हैं उन्हें, मेहनत कर रोजी कमाएँ।"

"ह्म्म्म!" "मनोवांछित पैसे देने से मना करके देखिए। प्रारंभ होगी धमकियाँ, बद्दुआएँ और श्राप देने का बेहतरीन अभिनय, जो आम जन के मन में खौफ पैदा करने के लिए पर्याप्त है। तभी फलता फूलता है इनका धंधा..।" "आपकी बातों में वजन है। पर नई पीढ़ी में कई अपवादस्वरूप भी हैं, उनमें एक हैं, मुंबई की गौरी सावंत। जिनकी नेक नियति तथा समाजसेवी प्रवृत्ति ने किन्नर समाज का मस्तक ऊँचा कर दिया है।'

क्योंकि सास भी कभी बहू थी

पूजा गुप्ता
मिर्जापुर, उ.प्र.

हमारे घरों में पहले बहू को लाए जाने के लिए ढोल बाजे बजाए जाते हैं लेकिन उसके घर आने के बाद शुरू हो जाती है कहानी घर घर की। शादी से पहले सास का नाम लड़कियों में मन में डर पैदा करता है कई लोग कहते हैं कि लड़का लड़की से ज्यादा सास बहू की कुंडली का मिलान कर लिया जाना चाहिए, क्योंकि बेटा से ज्यादा सास बहू के रिश्तो में दरार ज्यादा आती है। जैसे–जैसे जमाना बदल रहा है अब इस दौर में सास भी बहू के नाम से डरने लगी है उन्हें लगता है कि कल तक हमें हमारी सासों नें जीवन भर सताया अब हमें हमारी बहू सताने आई है! यानी सास और बहू दोनों ही मन ही मन एक दूसरे के नाम से डरती है।

शादी से पहले ही लड़कियां सतरंगी सपनों को देखती है और वह कल्पना करती है अपने होने वाले भावी पति की और अपनी होने वाली सास के बारे में सोचती है कि, ना जाने वो कैसी होगी? और उनसे मेरा निर्वाह हो पाएगा कि नहीं? इसी प्रकार सास के दरवाजे बहू आती है शादी हो कर तो दोनों में तकरार की भावना उत्पन्न होने लगती है पारिवारिक माहौल को देखकर दोनों का अपना अपना रवैया हो जाता है बहू रूठ कर अपने मायके चली जाती है तो कभी सासू मां गुस्सा कर अपने कमरे में बंद हो जाती है। इस प्रकार सास बहू दोनों ही एक दूसरे की अवहेलना करती हैं। यदि दोनों के झगड़े परिवार को लेकर है उनकी खुशहाली को लेकर है तो फिर लड़ाई क्यों होती है?

हमारे समाज में रूढ़िवादी मान्यताएं हैं कि बरसों पुरानी जो पुरानी रीत है उसके अनुसार सास को विलेन की तरह घोषित कर दिया जाता है। पुरानी रूढ़िवादी नजरिए उन्हें देखा जाता है। जब मां बेटी का रिश्ता मजबूत होता है तो सास बहू का रिश्ता मजबूत होने में इतनी परेशानी क्यों आती है? क्योंकि बचपन से ही लड़कियों के मन में यह बात डाल दी जाती है कि 'काम सीख ले तुझे दूसरे के घर जाना है तेरी सास तुझे गालियां देगी कि मां ने कुछ नहीं सिखाया है!' बस यही डर बेटियों की मन में बैठ जाता है। किसी भी इंसान को बेवजह बुरा नहीं ठहराया जा सकता है एक दूसरे के अच्छे बुरे दोनों गुण हुआ करते हैं। इसलिए यदि पुरानी दकियानूसी मान्यताओं के दायरे से बाहर आ जाए तो कभी भी एक दूसरे के प्रति गलत नजरिया वह लोग नहीं रख पाएंगी। आज के युग में सभी लड़कियां पढ़ी लिखी होती है, उन्हें पता है कि हमारी जागरूकता ही सही गलत की पहचान करा सकती है, पढ़ी लिखी लड़कियां कभी किसी के गलत बोलने पर विश्वास नहीं करती है उन्हें ससुराल में एडजस्ट होना आता है।

मायके में लड़कियों के घर के रिवाज अलग होते है और ससुराल में अलग रिवाज होते हैं। जब लड़कियां शादी होकर ससुराल आती है तो शुरू हो जाता है अपनी विचारधारा को सही साबित करने का सिलसिला। जब पुरानी विचारधारा नई विचारधाराओं से टकराती है तो दोनों के बीच में टकराव जरूर होता है, यदि एक दूसरे से यह तालमेल नहीं बनाती है तो एक दूसरे पर दोनों का दबाव बना रहता है। नई बहू को लगता है कि उनकी बात को सुनी नहीं जा रही है और सास को लगता है कि उन्होंने हमेशा ही से ही गलत ठहराया जाता रहा है। इसी वजह से समस्याएं पैदा होती है अपने दोषों को सुधारने के लिए दोनों में सामंजस्य होना बेहद जरूरी है। एक दूसरे को सास बहू समय दे। ना सास बहू की अवहेलना करें ना बहू सास की अवहेलना।

एक दूसरे के संबंध को सास बहू दोनों मिलकर उदारता से निभाए छोटी–छोटी बातों को नजरअंदाज करें शुरुआत में संबंधों को बनाने के लिए सामने वाले को अधिक से अधिक प्रेम व्यवहार दे, एक दूसरों की भावनाओं का सम्मान करते हुए एक दूसरे की कमियों को निकालने की वजह को खत्म करें व्यवहार में जितना लचीलापन होगा उतनी ही उनकी समस्याएं कम होंगी। इन सब से एक भावनात्मक संबंध बना रहना चाहिए, यदि इस प्रकार संबंध बन जाए तो एक दूसरे को सास बहू समझ पाएंगी।

अगर सास बहू के बीच किसी बात को लेकर तनाव होता है तो उसमें पति को बीच में कूदकर जज बनने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि उन्हें अपनी मां और पत्नी को समझाना चाहिए कि उनके इस व्यवहार से उन पर क्या असर हो रहा है, लेकिन यदि पति अपनी पत्नी का सपोर्ट नहीं कर सकता है या अपनी मां का, तो दोनों को लेकर टकराव हो जाता है और इस भट्टी में पिस जाता है पति! क्योंकि वह दोनों के बीच फिर कोई निर्णय नहीं कर पाता है।

सास बहू कामकाजी हो या कुशल गृहणियाँ, यदि यह दोनों अपने दायरे में कार्य करें तो मुश्किल नहीं आती है और इस प्रकार समस्याएं हद तक कम हो जाती है। आजकल तो बेटा सास बहू सभी मिलकर रहते हैं और बेटा अगर यह समझ जाए कि वह पति भी है और एक अच्छा बेटा भी है वह खुद भी एक पिता की भूमिका आगे चलकर निभाएगा, इसलिए वह अपनी पत्नी का भी सपोर्ट करें और अपनी मां का भी। इसी प्रकार यदि बहू यह सोंचे कि सासू 'मां' है और यदि सास यह सोंचे कि बहू मेरी ष्बेटीष् है तो दोनों में लड़ाइयां कम होगी। सास अपने पुराने दिनों को याद करें जब वह कभी बहू हुआ करती थी और अपनी ही सास की कितनी प्रकार की बातें वह सुना करती थी, इन सब बातों को लेकर यदि वह संवेदनशील होंगी तो दोनों कलह से बचेंगी और अपने बहू होने के दिन याद करके तब सास बनकर वो बहू के आगे खड़ी होगी तो अपने समय की उन सब बातों को दिमाग में रख कर चलेगी जब उन पर भी कभी जुर्म हुआ था तो शायद वह अपनी बहू को बुरे दिनों वाला जीवन नहीं देगी और दोनों साथ होगी तो रिश्तों को निभाने में दिक्कत नहीं आएगी।

गज़ल

मेरा अनादि काल से
कण–कण में वास है,
पर श्यमान हूँ उसे,
जिसमें उजास है ।

यों तो समुद्र–बूँद के
अपने भी रूप हैं,
फिर भी समुद्र बूँद में
करता प्रवास है।

मेरी सदैव दैन्य से
आत्मीयता रही,
स्वर्गिक विलासिता मुझे
आती न रास है।

तू जिस अनाम के लिए
व्याकुल रहा सदैव,
तुझमें ही बैठा ले रहा
वो उच्छ्वास है।

स्वीकारता है क्यों तू
परिस्थिति की दासता,
जब मुक्ति का उपाय भी
तेरे–ही पास है।

तेरे तो हाथ कर्म है,
परिणाम तो नहीं,
जो होना था, सो हो गया,
फिर क्यों उदास है ?

राजेन्द्र वर्मा, लखनऊ

विनाश

राजश्री सिन्हा
सोफिया (बुल्गारिया)

विनाश काले विपरीत बुद्धि,
कह गए सब पीर फकीर।
कलिकाल के छांव में,
मनुष्य हुआ हृदयविहीन।
एक दूजे के पीर को,
अनदेखा कर।
माया में सब हो गए लीन।
घर आंगन सब हो गए सुने।
भाई -भाई हो गए दूर,
लक्ष्मण रेखा पार करती,
आज की माडर्न हूर।
कभी अपनों के भगवान थे।
पीपल के छांव थे।
आज वृद्धाश्रम की शोभा बढ़ाते।
आंखों में सूनापन लिए,
एकाकीपन का दर्द झेलते।
तिरस्कृत जीवन जीते,
आज के बड़े बुजुर्ग।
कटे घाव पर, नमक मिर्च लगाते।
अपनों के विकास को,
सहन नहीं कर पाते।
बाधित कर हर राह को,
सुख का अनुभव करते।
राजनीति की बिसात पर,
रिश्तो नातों की भेंट चढ़ाते।
मानव मूल्यों का त्याग कर।
बेरहमी का परिचय देते।
दो दिन की दुनिया है।
यह कहाँ समझ पाते।
झूठे शान शौकत के दंभ में,
सुख–चौन सब खोते।
नैतिकता से वंचित हो,
विषयुक्त हुआ मानव जीवन।
पाप की गठरी के बोझ तले।
नीड़ का निर्माण हो फिर कैसे?

मोदी सरकार के नौ साल पूरे होने पर भाजपा चलाएगी विशेष सम्पर्क अभियान

लोक पहल

बरेली। कर्नाटक में मिली बड़ी हार के बाद भारतीय जनता पार्टी एक्शन मोड में आ गई है। पार्टी लोगों तक पहुंचने और सरकार की नीतियों से अवगत कराने का कोई भी मौका छोड़ना नहीं चाहती। केंद्र में मोदी सरकार के नौ साल पूरे होने पर भाजपा ने उप्र के लिए एक महायोजना तैयार की है। पूरे प्रदेश में 30 मई से 30 जून तक विशेष अभियान चलाया जाएगा। बरेली में भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री सुनील बंसल और प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी ने ब्रजक्षेत्र की बैठक कर इसकी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि इस पर सभी कार्यकर्ता गंभीरता से जुटें। इसकी रिपोर्ट प्रदेश व राष्ट्रीय संगठन तक जाएगी। इन अभियानों की सफलता सांसदों के रिपोर्ट कार्ड में भी शामिल होगी।

30 मई को इस अभियान का शुभारंभ रैली के साथ होगा। जिला, मंडल, शक्ति केंद्र और बूथ स्तर पर विशेष कार्यक्रमों के जरिये केंद्र सरकार की नीतियों और उपलब्धियों को जनता तक पहुंचाया जाएगा। हर लोकसभा क्षेत्र में दो राष्ट्रीय

स्तर के नेताओं को इस अभियान का प्रभारी बनाया जाएगा। रैलियों में मुख्यमंत्री, केंद्रीय मंत्री, प्रदेश सरकार के मंत्री, सांसद, विधायक के अलावा राष्ट्रीय और प्रदेश स्तर के बड़े नेता शामिल होंगे। लोकसभा स्तर पर प्रेसवार्ता कर सांसद अपने क्षेत्र में कराए गए विकास कार्यों और केंद्र व प्रदेश सरकार के कार्यों को बताएंगे। प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन के जरिये ऐसे लोगों को जोड़ने का प्रयास होगा जो अब तक भाजपा से जुड़े नहीं हैं। राष्ट्रीय महामंत्री सुनील बंसल ने कहा कि इन अभियानों में असल में काम होना है। कहीं भी कोई खानापूरी नहीं होनी चाहिए। प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन में समाज के हर वर्ग के लोगों को जोड़कर उनसे संवाद करना है। यह नहीं होना चाहिए कि हमारे नेता बोलें और सामने हमारे ही कार्यकर्ता उसे सुनें। ईमानदारी से जनता तक पहुंचना और उन तक अपनी बात पहुंचाना ही हमारा एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी ने कहा कि विशेष अभियान के तहत हमें हर मतदाता तक पहुंचना है।

समान मतदाता सूची से चुनाव कराने की तैयारियां

सामान मतदाता सूची से चुनाव कराने की तैयारियां

लोक पहल

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में सम्पन्न हुए निकाय चुनाव में मतदाता सूची में गड़बड़ी की शिकायतें प्रदेश के सभी नगर निगमों के साथ ही नगर पालिकाओं और नगर पंचायतों में सामने आयी। एक–एक वार्ड में हजारों की संख्या में वोटों का कटने से जहां एक ओर मतदान प्रतिशत में गिरावट देखी गई वहीं दूसरी ओर हजारों मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करने से वंचित रह गए। विगत विधानसभा चुनाव में मतदान करने वाले हजारों मतदाताओं का नाम निकाय चुनाव की मतदाता सूची में गायब मिला। वोटर लिस्टों में भारी गड़बड़ी को देखते हुए अब उत्तर प्रदेश सरकार के सामने कॉमन वोटर लिस्ट से चुनाव कराने के अलावा और कोई विकल्प नहीं रह गया है। उप्र राज्य निर्वाचन आयोग ने करीब दो वर्ष पूर्व यह वादा किया था कि नगर निकाय चुनाव कॉमन वोटर लिस्ट से कराये जाएंगे लेकिन आयोग अपने वादों को पूरा करने में नाकाम रहा लेकिन नगर निकाय चुनाव में मतदाता सूचियों में मिली गड़बड़ी की शिकायतों के बाद चुनाव आयोग ने अब कामन वोटर लिस्ट से उप्र में चुनाव कराने की मुहिम शुरू कर दी है। आयोग की टीम जल्द ही विभिन्न राज्यों का दौरा कर अध्ययन करेगी कि वहां कॉमन वोटर लिस्ट बनाने में क्या–क्या अड़चनें आईं और क्या–क्या प्रक्रिया अपनाई गई थीं।

आयोग ने माना है कि निकाय चुनाव की मतदाता सूची में मिली गड़बड़ियों का प्रमुख कारण नगर निकाय की मतदाता सूची लोकसभा सूची से अलग होना ही है। अब आयोग कॉमन वोटर लिस्ट पर काम कर रहा है। राज्य निर्वाचन आयुक्त मनोज कुमार के मुताबिक निकाय चुनाव की मतदाता सूची को लोकसभा चुनाव की मतदाता सूची से जोड़ने का पायलट प्रोजेक्ट लखनऊ से शुरू किया जा रहा है।

दलों पर भारी पड़ गए निर्दलीय

प्रदेश में बड़ी संख्या में अध्यक्ष और सदस्य पदों पर निर्दलीय उम्मीदवारों ने फहराया जीत का परचम

लोक पहल

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में सम्पन्न हुए नगर निकाय चुनाव में वैसे तो सभी प्रमुख राष्ट्रीय दलों ने अपने उम्मीदवार मैदान में उतारे थे लेकिन मतदाताओं ने राष्ट्रीय दलों के उम्मीदवारों से ज्यादा तरजीह निर्दलीय उम्मीदवारों को दी और वे चुनाव में दलीय उम्मीदवारों से भारी पड़े। प्रदेश के मतदाताओं ने जहां एक ओर राष्ट्रीय दलों पर अपना भरोसा जताया तो निर्दलीय उम्मीदवारों को भी निराश नहीं किया। कई स्थानों पर निर्दलीय उम्मीदवारों को सभी पार्टियों से ज्यादा वोट मिले। राजनीतिक दलों में भाजपा को सबसे ज्यादा 31.22 प्रतिशत मत मिले, लेकिन निर्दलियों को उससे भी ज्यादा 33.75 प्रतिशत वोट मिले।

नगर पालिकाओं में तो 58 प्रतिशत से ज्यादा सदस्य ऐसे रहे जो निर्दलीय रूप में चुनाव जीत गए। इसी तरह से नगर पंचायतों में भी करीब 67 प्रतिशत से ज्यादा निर्दलीय सदस्य विजयी रहे। माना जाता है कि नगर निकाय चुनाव दलगत राजनीति से ऊपर उठकर आपसी सम्बन्धों का चुनाव है। चुनाव लड़ने वाले पार्षद और सदस्य पद के प्रत्याशी कई बार तो पड़ोसी भी होते हैं ऐसे में मतदाताओं के सामने दलगत राजनीति से

ऊपर उठकर हर सुख दुख काम आने वाले पड़ोसी उम्मीदवारों के पक्ष में मतदान करना मजबूरी हो जाता है। भले ही वह निर्दलीय क्यों न हो। यही कारण है कि निकाय चुनाव में भारी संख्या में निर्दलीय उम्मीदवार मैदान मार लेते है।

नगर पालिका और नगर पंचायत में तो यह सबसे ज्यादा है। यहां ग्राम पंचायत चुनाव की तरह ही लोगों का आपस में संपर्क ज्यादा रहता है। यही कारण है कि यहां मतदाता दलगत राजनीति से ऊपर उठकर भी वोट करते हैं। प्रत्याशी जाना पहचाना है और उम्मीदवार की कसौटी पर खरा उतरता है तो फिर वोटर यह नहीं देखते हैं कि वह किसी दल से लड़ रहा है या निर्दलीय। बल्कि कई बार तो दल से टिकट लाने पर उम्मीदवार को नुकसान हो जाता है।

भले ही महापौर पद पर एक भी उम्मीदवार निर्दलीय न जीता हो पर प्रदेश में 206 निर्दलीय पार्षद जीत गए। उधर, 41 नगर पालिका अध्यक्ष भी निर्दलीय जीते जबकि पालिका में ही 3130 निर्दलीय सदस्य जीते हैं। अध्यक्ष के पद पर दलीय उम्मीदवारों की विजयी का आंकड़ा जहां 20 प्रतिशत रहा है वहीं निर्दलीय सदस्य की जीत का आंकड़ा 58.76 प्रतिशत रहा। इसी तरह से नगर पंचायत में अध्यक्ष पद पर 195 निर्दलीय यानी कुल 35.85 प्रतिशत जीते। इस तरह कुल 4825 निर्दलीय सदस्य पद पर जीत गए।

दुनिया के लिए मिसाल है भारत और नेपाल की दोस्ती : प्रो. द्विवेदी

'सार्क जर्नलिस्ट फोरम' के प्रतिनिधिमंडल ने किया आईआईएमसी का दौरा

लोक पहल

नई दिल्ली। सार्क देशों के पत्रकार संगठन 'सार्क जर्नलिस्ट फोरम' (एसजेएफ) के प्रतिनिधिमंडल ने भारतीय जन संचार संस्थान का दौरा किया।

इस मौके पर आईआईएमसी के महानिदेशक ने प्रतिनिधिमंडल को संबोधित करते हुए कहा कि भारत और नेपाल सभ्यता, संस्कृति और आपसी आदान–प्रदान के माध्यम से प्राचीन काल से जुड़े हुए हैं। भारत और नेपाल के बीच मित्रता बढ़ाने में पत्रकारों की अहम भूमिका है।

एसजेएफ के अध्यक्ष राजू लामा ने कहा कि आईआईएमसी में आकर वे बेहद गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। जनसंचार शिक्षण एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र में भारतीय जन संचार संस्थान द्वारा किये जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि अपनी इस यात्रा के माध्यम से उन्हें मीडिया शिक्षण के क्षेत्र में हो रहे नवाचारों की जानकारी मिली है। आईआईएमसी के महानिदेशक प्रो. डॉ. संजय द्विवेदी ने प्रतिनिधियों का स्मृति चिन्ह और संस्थान की प्रकाशन सामग्री देकर अभिनंदन किया। इस अवसर पर एसजेएफ के अध्यक्ष राजू लामा, आईआईएमसी के डीन (छात्र कल्याण) प्रो. प्रमोद कुमार, डॉ. मीता उज्जैन, डॉ. पवन कौंडल एवं अंकुर विजयवर्गीय, मोहम्मद आरिफ अंसारी, युवराज शर्मा, दशरथ घिमिरे, शिवा रेगमी, रूद्र प्रसाद सुबेदी एवं करण ताम्रकार आदि मौजूद रहे।

विधान परिषद उपचुनाव में 20 साल होगा मतदान

विधान परिषद की दो सीटों पर भाजपा–सपा आमने सामने

लोक पहल

लखनऊ। आगामी 29 मई को विधान परिषद की सीट के लिए वोट डाले जाएंगे। प्रदेश में करीब 20 साल बाद ऐसा मौका आया है जब विधान परिषद के उप चुनाव मतदान से होगा। इससे पहले वर्ष 2002 में ऐसी स्थिति आई थी, जब रालोद के मुन्ना सिंह चौहान के खिलाफ निर्दल यशवंत ने ताल ठोकी थी। हालांकि बाजी चौहान ने मारी थी। अब 29 मई को दो सीटों पर होने वाले उप चुनाव के लिए सत्ताधारी भाजपा के उम्मीदवारों के खिलाफ मुख्य विपक्षी दल सपा ने भी प्रत्याशी उतार दिए हैं।

विधान परिषद की दो सीटें एमएलसी लक्ष्मण आचार्य के इस्तीफा देने और बनवारी लाल दोहरे के निधन से खाली हुई हैं। इन सीटों को भरने के लिए चुनाव आयोग उप चुनाव करा रहा है। दोनों ही सीटें भाजपा के पास थीं और उसने मानवेंद्र सिंह और पदमसेन को प्रत्याशी बनाया है।

विधान परिषद का उप चुनाव वरीयता व आनुपातिक मतों के बजाय बहुमत के आधार पर होता है। यानी, जिस पार्टी के ज्यादा विधानसभा सदस्य होंगी, वही जीतेगा। वर्तमान में विधानसभा के 403 में से 274 सदस्य भाजपा के हैं, जोकि जीत के लिए जरूरी नंबर से कहीं ज्यादा हैं।

उप चुनाव में मतदान की स्थिति इससे पहले नवंबर 2002 में हुए चुनाव में आई थी। उप चुनाव में रालोद ने मुन्ना सिंह चौहान को अपना प्रत्याशी बनाया तो निर्दलीय प्रत्याशी यशवंत ने भी पर्चा दाखिल कर दिया। 18 नवंबर 2002 को मतदान हुआ तो परिणाम रालोद के पक्ष में गया था।

भाषण प्रतियोगिता में अलख को मिला तीसरा स्थान

सांसद राजेश वर्मा ने किया सम्मानित

सीतापुर (लोक पहल)। युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय भारत सरकार की संस्था नेहरू युवा केन्द्र की ओर से युवा महोत्सव– 2023 का आयोजन किया गया। महोत्सव के दौरान आयोजित भाषण प्रतियोगिता में कृष्णा डिग्री कालेज के छात्र अलख कान्त श्रीवास्तव ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। उन्हें सीतापुर के सांसद राजेश कुमार वर्मा ने स्मृति चिन्ह, प्रमाण पत्र व एक हजार की धनराशि प्रदान कर सम्मानित किया।

आंखों की रोशनी बढ़ाने के लिए करें ये योगासन

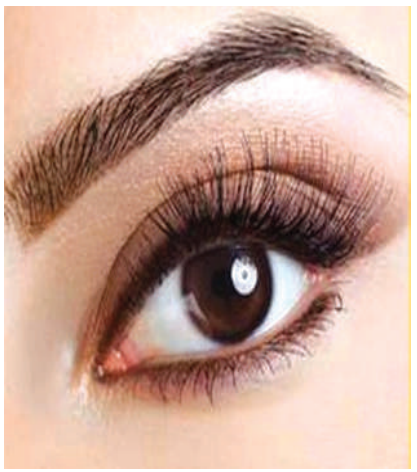

चश्मा लगाने की नहीं पड़ेगी जरूरत

गलत खानपान, मोबाइल या कंप्यूटर स्क्रीन पर अधिक समय बिताने और आंखों को आराम न देने के कारण कम उम्र से ही लोगों को नजर कम होने की समस्या हो सकती है। उम्र बढ़ने के साथ आंखों की तमाम बीमारियां और रोशनी कम होना आम समस्या है लेकिन अब छोटे बच्चों में आंखों की समस्या बढ़ने लगी है, जो कि चिंताजनक है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, सभी को हमेशा आंखों की सेहत का ख्याल रखना जरूरी है। आंखों की सेहत के लिए जीवनशैली में सुधार और पौष्टिक आहार का सेवन करना चाहिए। साथ ही दिनचर्या में कुछ प्रकार के योगासनों को शामिल करने की आदत भी बनाएं। कई तरह की शारीरिक समस्याओं के साथ ही योग आंखों के लिए भी फायदेमंद है। योग विशेषज्ञों के मुताबिक, अगर आप में आंखों की बीमारियों की शुरुआत है तो रोजाना योग का अभ्यास करना चाहिए। इससे आंखों की रोशनी तेज होती है और चश्मा लगाने से बचा जा सकता है।

अनुलोम-विलोम प्राणायाम

प्राणायाम के दैनिक आस से संपूर्ण शरीर को स्वस्थ रखा जा सकता है। नियमित अनुलोम विलोम प्राणायाम का आस अवरूद्ध ऊर्जा चैनलों (नाड़ियों) को साफ करने और मन को शांत रखने में सहायक है। तंत्रिकाओं को राहत दिलाने और दृष्टि में सुधार के साथ ही त्वचा को स्वस्थ बनाने के लिए अनुलोम विलोम प्राणायाम का नियमित आस करना चाहिए।

सर्वांगासन योग

आंखों की सेहत के साथ ही रक्त संचार को ठीक रखने के लिए सर्वांगासन के आस की आदत बनाएं। सर्वांगासन के नियमित आस से मस्तिष्क और ऑप्टिक नर्व्स में रक्त परिसंचरण को बढ़ावा मिलता है। वहीं आंखों को आराम देने के साथ मस्तिष्क को भी स्वस्थ बनाता है।

हलासन योग का लाभ

पीठ-कमर से लेकर रक्त के परिसंचरण को ठीक बनाए रखने के लिए हलासन योग का आस लाभकारी माना जाता है। हलासन शरीर के ऊपरी हिस्से में रक्त के संचार को बढ़ावा देने में मदद करता है जिसके कारण आंखों को स्वस्थ रखा जा सकता है। नियमित तौर पर इस योग के आस से वृद्धावस्था तक आंखों की रोशनी को बेहतर बनाए रखा जा स कता है। वहीं तंत्रिका तंत्र को शांत करने और इससे संबंधित विकारों के जोखिम को कम करने में भी हलासन लाभकारी है।

बिना कसरत किए घटाएं अपना वजन

या आप भी अपनी लाइफस्टाइल नहीं बदल पा रहे हैं? या आपका वजन बढ़ रहा है? या आप भी वजन कम करने के लिए तमाम तरह के जतन कर रहे हैं, लेकिन कोई नतीजा नहीं मिल रहा? वजन घटाने के लिए डाइटिंग का ले रहे हैं सहारा? वजन कम करना तो चाहते हैं, लेकिन तमाम कोशिश के बावजूद कसरत नहीं कर पाते? तो इसका पहला तरीका है कि दिन में आप चाहे दो बार खाना खाते हों या तीन बार। आपको बस अपना खाना खाने के बाद 20 मिनट के लिए बिल्कुल आराम से टहलना है। अपने घर में ही टहल लें। खाना खाने के बाद नियम बना लीजिए कि 20 मिनट के लिए आराम से टहलना है। इसके लिए मोबाइल या घड़ी में 20 मिनट का टाइमर लगा लें। चाहें तो ही ईयरफोन लगाकर या ऐसे ही टहलने लगें। बस ध्यान इतना रखना है कि दिन में हर बार खाना खाने के बाद इसे करना ही है। जबकि दूसरा तरीका है कि जब भी खाना खाएं, कमर को सीधा रखकर खाएं। कभी भी झुककर या आराम की मुद्रा में बैठकर खाना नहीं खाना चाहिए। कमर को सीधे रखकर खाने से भूख कम लगती है, जबकि आराम से या झुककर बैठने से भूख ज्यादा लगती है। कभी भी खाना खाने के बाद सोफा-कुर्सी, बिस्तर पर न जाएं। रात का खाना शाम सात बजे से पहले ही खाने की आदत डाल लें।

देखो हँस मत देना

एक लड़की एक लड़के के साथ बैठी थी, दूसरे दिन दूसरे लड़के के साथ बैठी थी, तीसरे दिन तीसरे लड़के के साथ बैठी थी, इस कहानी से तुं या शिक्षा मिलती है? लड़के बदल जाते हैं पर लड़कियां नहीं।

महिला- डॉटर साहब, मेरे पति नींद में बातें करने लगे हैं! या करूं? डॉटर- उन्हें दिन में बोलने का मौका दीजिए!

टीटी ने चिंटू को प्लेटफॉर्म पर पक लिया, टीटी- टिकट दिखा, चिंटू- अरे मैं ट्रेन में आया ही नहीं, टीटी- या सबूत है? चिंटू- अबे सबूत यही है कि मेरे पास टिकट नहीं है।

पत्नियां बहुत समझदार होती हैं.... दूसरो के सामने अपने पति को कभी सीधे बेवकूफ नहीं बोलती हैं... बल्कि घुमाकर कहती हैं...अरे इनको तो कुछ पता ही नहीं है.... बहुत सीधे-सादे हैं दुनियादारी की समझ ही नहीं है।

कहानी — बंदर और लकड़ी का खूंटा

एक समय की बात है, जब शहर से थोड़ी दूर में एक मंदिर बनाया जा रहा था। उस मंदिर के निर्माण में लकड़ियों का इस्तेमाल किया जा रहा था। लकड़ियों के काम के लिए शहर से कुछ मजदूर आए हुए थे। एक दिन मजदूर लकड़ी चीर रहे थे। सारे मजदूर रोज दोपहर का खाना खाने के लिए शहर जाया करते थे। उस दौरान एक घंटे तक वहां कोई भी नहीं रहता था। एक दिन दोपहर के खाने का समय हुआ, तो सभी जाने लगे। एक मजदूर ने लकड़ी आधी ही चीर थी। इसलिए, वह बीच में लकड़ी का खूंटा फंसा देता है, ताकि दोबारा चीरने के लिए आरी फंसाने में आसानी हो। उनके जाने के कुछ समय बाद बंदरों का एक समूह वहां आ जाता है। उस समूह में एक शरारती बंदर था, जो वहां पड़ी चीजों को उल्टा-पुल्टा करने लगा। बंदरों के सरदार ने सभी को वहां रखी चीजों को छेड़ने से मना किया। कुछ समय बाद सारे बंदर पेड़ों की तरफ वापस जाने लगे, तो वह शरारती बंदर सबसे बचकर पीछे रह जाता है और उधम मचाने लगता है। शरारत करते-करते उसकी नजर उस अधचिरे लकड़ी पर पड़ती है, जिस पर मजदूर ने लकड़ी का खूंटा लगाया था। खूंटे को देखकर बंदर सोचने लगा कि उस लकड़ी को वहां पर यों लगाया है, उसे निकालने पर या होगा। फिर वह उस खूंटे को बाहर निकालने के लिए खींचने लगता है। बंदर के अधिक जोर लगाने पर वह खूंटा हिलने और खिसकने लगता है, जिसे देखकर बंदर खुश होता है और जोर लगाकर उस खूंटे को सरकाने लगता है। वह खूंटे को निकालने में इतना मगन हो जाता है कि उसे पता ही नहीं चलता कि कब उसकी पूंछ दोनों पाटों के बीच में आ गई। बंदर पूरी ताकत के साथ खूंटे को खींचकर बाहर निकाल देता है। खूंटा निकलते ही लकड़ी के दोनों भाग चिपक जाते हैं और उसकी पूंछ बीच में फंस जाती है। पूंछ के फंसने पर बंदर दर्द के मारे चिल्लाने लगता है और तभी मजदूर भी वहां पहुंच जाते हैं। उन्हें देखकर बंदर भागने के लिए जोर लगाता है, तो पूंछ टूट जाती है। वह चीखते हुए टूटी पूछ लेकर भागता हुआ अपने झुंड के पास पहुंच जाता है। वहां पहुंचते ही सभी बंदर उसकी टूटी हुई पूंछ देखकर हंसने लगते हैं।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा यह सप्ताह

मेष — आज आपका दिन कॉन्फिडेंस से भरा रहेगा। आज कुछ नए दोस्त बनने की संभावना है। आपका सामाजिक दायरा बहुत हद तक बढ़ सकता है।

वृषभ — व्यावसायिक संदर्भ में नए व्यापार संबंधों और सौदों को अंतिम रूप देने के लिए के लिए यह एक अनुकूल अवधि है। प्रेम संबंधों के मामले में आप भाग्यशाली रहेंगे।

मिथुन — आज ऑफिस के काम में आपके सामने कई चुनौतियां आने की संभावना है। आपको अपने किसी खास काम में मित्र की मदद मिलेगी। काम समय पर पूरे होंगे।

कर्क — आप एक नई एसोसिएशन या साझेदारी में प्रवेश कर सकते हैं। परिवार और दोस्त खुशी के समय और यादगार अवसरों को मनाने के लिए इकट्ठा होंगे।

सिंह — आज आपको किसी काम से भागदौड़ करनी पड़ सकती है। आपको परिवार वालों का सहयोग मिलेगा। आपको अपने खर्चे को नियंत्रण में रखना चाहिए।

कन्या — व्यावसायिक क्षेत्र में आज आपको बहुत अच्छे परिणाम मिलेंगे। प्रभावशाली लोगों से संपर्क लाभकारी रहेंगे। संपत्ति या वाहन की बिक्री या खरीद संभव है।

तुला — आज माता-पिता अपने बच्चों के साथ कहीं आसपास पिकनिक स्पॉट जायेंगे। बच्चे खुश रहेंगे। आप किसी समारोह में जाने की प्लानिंग करेंगे।

वृश्चिक — लंबे समय से पोषित सपने अब पूरे हो सकते हैं। आपके पिछले प्रयास अब फल देंगे। व्यवसायी व्यवसाय के एक नए क्षेत्र में प्रवेश कर सकते हैं।

धनु — आज आपके सारे काम मन-मुताबिक पूरे होंगे। आप अपने बच्चों के साथ खुशी के पल बितायेंगे। पारिवारिक रिश्ते मजबूत होंगे।

मकर — आज रुके हुए कार्यों को आगे बढ़ाने में बहुत मदद मिलेगी। पराक्रम और उत्साह में वृद्धि रहेगी। काम में मन लगेगा और मेहनत के अनुसार परिणाम भी आएगा।

कुंभ — आज आपका कोई बड़ा काम संतान की मदद से पूरा हो जायेगा। माता-पिता का सहयोग भी बना रहेगा। शाम को उनके साथ किसी धार्मिक स्थल पर जायेंगे।

मीन — आज आपको बहुत सारे विकास दिखाई देंगे। व्यवसाय में वृद्धि और व्यापार में बेहतरी के अवसर मिलेंगे। आर्थिक रूप से आप सुरक्षित रहेंगे।

बॉलीवुड | मन की बात

सबके के लिए नहीं खुलते फिल्म इंडस्ट्री के दरवाजे शहनाज गिल

अभिनेत्री और सोशल मीडिया सेनसेशन शहनाज गिल सलमान खान की किसी का भाई किसी की जान से बॉलीवुड में डू करने के बाद एटिंग की लास लेने में व्यस्त हैं। हिंदी सिनेमा में कदम रखने से पहले, शहनाज ने पंजाबी फिल्म इंडस्ट्री में काम किया था। पंजाब की कटरीना के नाम से मशहूर एट्रेस ने जहां बिग बॉस में आकर घर-घर में पहचान बनाई, वहीं अब वह धीरे-धीरे बॉलीवुड में अपने पैर पसार रही हैं। हाल ही में शहनाज ने एक इंटरव्यू में बॉलीवुड के बारे में बात की है। उनका मानना है कि इंडस्ट्री सभी के लिए खुली नहीं है। एक मीडिया संस्थान से बात करते हुए, शहनाज ने खुलासा किया कि उनके लिए चीजें आसान नहीं हैं और वह जो कुछ भी हासिल कर रही है, वह उनकी कड़ी मेहनत का नतीजा है। अभिनेत्री ने कहा, इंडस्ट्री ओपन नहीं होती, ओपन करनी पड़ती है। आपको खुद पर काम करना होगा... अपने आप को बदलें। मेरे लिए कुछ भी खुला नहीं है, मैं जो कर रही हूं, अपनी मेहनत से कर रही हूं। शहनाज का मानना है कि दर्शकों के बीच खुद को एटिव बनाए रखने के लिए उन्हें खुद को नए सिरे से बदलते रहने की जरूरत है। शहनाज नहीं चाहतीं कि उनके प्रशंसक उनसे ऊब जाएं। अभिनेत्री ने कहा, अगर आप खुद को वैसे ही पेश करते हैं जैसे आप हैं और अपने दर्शकों को कुछ भी नया नहीं देते हैं, तो वे बोर हो जाएंगे। हम पकि फिगर हैं और अगर हम दर्शकों को अलग-अलग रूप नहीं दिखाएंगे, तो वे हमसे ऊब जाएंगे। यह पहली बार नहीं है जब शहनाज ने इंडस्ट्री में एटिव रहने और उसमें जगह बनाने के लिए खुद को बदलने की बात कही है। इससे पहले भी एक यूट्यूब लाइव वीडियो में, उन्होंने यह भी दावा किया कि उसने अपना वजन कम किया योंकि एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री केवल पतली लड़कियों को पसंद करती है। वर्कफ्रंट की बात करें तो शहनाज को आखिरी बार जहां सलमान खान स्टारर फिल्म किसी का भाई किसी की जान में देखा गया था, वहीं अभिनेत्री अगली बार रिया कपूर की फिल्म में नजर आएंगी। इसमें उनके साथ अनिल कपूर और भूमि पेडनेकर भी होंगे।

शाहरुख के हाथ से फिसली डान-3

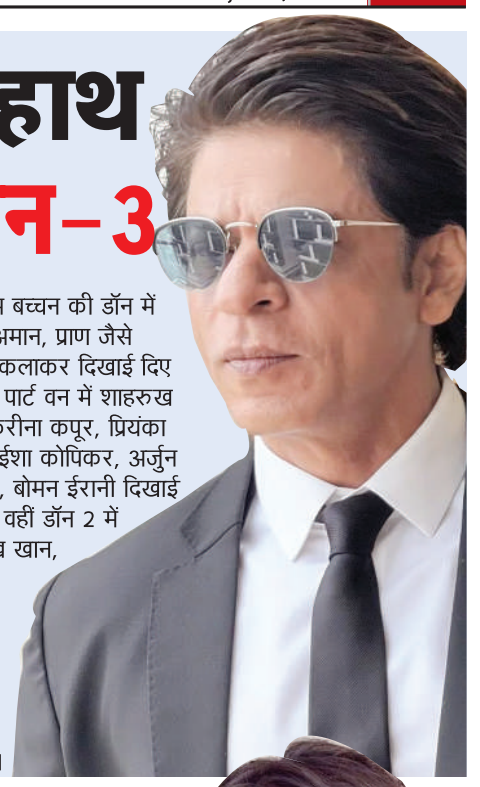

कई महीनों से शाहरुख खान की फिल्म डॉन 3 चर्चा में बनीं हुई है। फिल्म को लेकर तरह-तरह की अपडेट सामने आ रही हैं। बीते दिन फिल्म से जुड़ी शॉकिंग खबर सामने आई, जब फैंस को पता चला कि डॉन 3 में किंग खान नजर नहीं आने वाले है। जहां एक तरफ लोग इस बात से निराश थे, तो वहीं यह भी जानना चाहते थे कि शाहरुख कि जगह फिल्म में कौन लेगा। अब इस बात का भी खुलासा हो गया है। नए डॉन के लिए इस सुपरस्टार का नाम सामने आ रहा है।

अमिताभ बच्चन के साथ शुरू हुए डॉन के करवा को शाहरुख खान ने आगे बढ़ाया था। फिल्म में शाहरुख खान का निगेटिव किरदार लोगों को काफी पसंद आया था। लेकिन अब शाहरुख खान ने फिल्म के 3 पार्ट में काम करने से मना कर दिया है। फिल्म समीक्षक सुमित कडेल के अनुसार मेकर्स डॉन 3 के लिए रणबीर सिंह को लेकर विचार कर रहे हैं।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक डॉन 3 में इस बार शाहरुख खान धूम नहीं मचाएंगे। किंग खान ने इस फिल्म को करने से मना कर दिया है। जानकारी के मुताबिक शाहरुख खान के साथ निर्देशक फरहान अर और रितेश सिधवानी ने कई बार बातचीत की थी। कई बार स्क्रिप्टिंग स्टेज तक पहुंचीं। लेकिन अब हाल ही में हुई शाहरुख खान के साथ मीटिंग में एटर ने डॉन 3 करने से साफ मना कर दिया।एटर सिर्फ कमर्शियल फिल्में करना चाहते हैं, जो यूनिवर्सल अपील वाली हो और उनके लिस्ट में डॉन फिट नहीं हो रही है।

डॉन और इसके पार्ट 1 और 2 में कई ए लिस्टर स्टार्स नजर आ चुके हैं। जहां अमिताभ बच्चन की डॉन में जीनत अमान, प्राण जैसे दिग्गज कलाकर दिखाई दिए थे। वहीं पार्ट वन में शाहरुख खान, करीना कपूर, प्रियंका चोपड़ा, ईशा कोपिकर, अर्जुन रामपाल, बोमन ईरानी दिखाई दिए थे। वहीं डॉन 2 में शाहरुख खान, प्रियंका चोपड़ा, लारा दा जैसे सितारे नजर आए थे।

भोजपुरी | मसाला

'कच्चे लिंबू' में सपनों की उड़ान भरती नजर आई राधिका मदान

राधिका मदान अपनी खूबसूरती के साथ अपनी अदाकारी के लिए भी जानी जाती हैं। अभिनेत्री अपनी हालिया रिलीज वेब सीरीज सास बहू और लेमिंगो को लेकर सुर्खियों में चल रही हैं। रिलीज के बाद से ही इस वेब सीरीज को दर्शकों का काफी अच्छा रिस्पॉन्स मिल रहा है।

वेब सीरीज कच्चे लिंबू में राधिका मदान एक जुझारू लड़की के किरदार में नजर आ रही है, जो अपने भाई को चुनौती देती है। ट्रेलर में राधिका के हाथ में बल्ला देखने को मिलता है। अभिनेत्री हाथ में बल्ला उठा लेती हैं और मैदान में निकल पड़ती हैं। इसके बाद ट्रेलर में दिखाया गया है कि राधिका एक टीम बनाती है और लड़ती हैं, लेकिन इसके आगे की कहानी को जानने को लिए फिल्म रिलीज होने का इंतजार करना पड़ेगा।

आपको बता दें कि राधिका की फिल्म कच्चे लिंबू ओटीटी प्लेटफॉर्म पर स्ट्रीम होगी। इस फिल्म को दर्शक 19 मई से अपने मोबाइल, लैपटॉप में देख पाएंगे। यही नहीं, इस फिल्म की 47वें टोरंटो फिल्म फेस्टिवल में स्क्रीनिंग भी हो चुकी है। शुभम योगी के डायरेशन में बनी इस फिल्म में राधिका के अलावा आयुष मेहरा और रजत बारमेचा भी लीड रोल में हैं।

वर्क फ्रंट की बात करें तो इससे पहले राधिका अर्जुन कपूर के साथ फिल्म कु में नजर आई थीं। प्रोजेट्स की बात करें तो राधिका के पास सना, हैप्पी टीचर्स डे जैसी फिल्में भी हैं। इसके अलावा वह अक्षय कुमार के साथ एक तमिल फिल्म में भी नजर आने वाली हैं।

अजब-गजब | सांप से अपने बच्चों को बचाने के लिए नेवला करता है वार

क्या आप जानते हैं सांप और नेवले में क्यों है दुश्मनी, कौन किस पर पड़ता है भारी?

सांप और नेवले को लेकर कई उपमाएं दी जाती हैं। दोनों की दुश्मनी के किस्से बेहद फेमस हैं। हर कोई जानता है कि जब सांप और नेवला आमने सामने होते हैं तो उनके बीच युद्ध होना लाजमी है। पर या आपने कभी सोचा है कि आखिर दोनों के बीच ये दुश्मनी यों है? आखिर यों दोनों एक दूसरे को पसंद नहीं करते? चलिए विज्ञान के अनुसार इस सवाल का सही जवाब जानने की कोशिश करते हैं।

वेबसाइट forestwildlife.org की रिपोर्ट के अनुसार नेवले और सांप एक दूसरे के दुश्मन इसलिए होते हैं योंकि उन्हें प्रकृति ने ही ऐसा बनाया है। ये उनका प्राकृतिक वृ होता है जो दोनों को एक दूसरे का दुश्मन बना देता है। कई तरह के सांप नेवले के बच्चों को अपना भोजन बना लेते हैं और बेहद छोटे बच्चों पर तब हमला कर देते हैं, जब मादा नेवला उस व वहां मौजूद नहीं होती है। ये भी एक कारण है कि नेवले, सांपों से खुद को और बच्चों को बचाने के लिए हमला कर देते हैं। सांप, नेवलों के आहार का अहम हिस्सा होते हैं।

पर सवाल ये उठता है कि दोनों में से जीत किसकी होती है? भारतीय नेवले, जो आपको शहरों या गांवों में आसानी से दिख जाएंगे, बड़े से बड़े सांपों को पछाड़ देते हैं। यहां तक कि दुनिया का सबसे जहरीला सांप, किंग कोबरा भी इन नेवलों का शिकार बन जाता है। नेवले, सांपों की तुलना में इतने तेज होते हैं कि वो सांप के सिर और शरीर के पिछले हिस्से पर घातक प्रहार करते हैं जिससे उनकी मौत हो जाती है। पर कई बार ऐसा भी होता है कि नेवले की भी सांप के हमले में मौत हो जाती है। वो जब सांप को मारकर खाते हैं, तो सांप के दांत उनके पेट में या शरीर के किसी अन्य हिस्से में चुभ जाते हैं जिससे अंदरूरी ीडिंग होने लगती है।

कई बार तो किंग कोबरा जैसा जहरीला सांप भी नेवले को काट देता है पर उसकी मौत नहीं होती। ऐसा इसलिए योंकि वो सांप के जहर के प्रति इून रहता है। सांपों के दिमाग में कास न्यूरोट्रांसमिटर होता है जिसे एसिट यलक ॉलिन क हते हैं। एसिटायलकॉलिन, खून में जहर से मिल जाता है और उसे न्यूट्रलाइज कर देता है। इस तरह जो जहर होता है वो नेवले के नर्वस सिस्टम तक नहीं पहुंच पाता। कई जानकारों का दावा है कि नेवले और सांप की लड़ाई में 75 से 80 बार नेवले की ही जीत होगी।

कुों की तरह भौंकती है चिड़िय । आवाज सुनकर हो जाएंगे कनयूज

सुकून से बैठकर चिड़ियों के चहचहाने की आवाज सुनना सभी को अच्छा लगता है, लेकिन या कोई पक्षी कुों की तरह भौंक सकता है? आप सोच रहे होंगे कि भला ऐसा भी हो सकता है या? हालांकि इस वक्त सोशल मीडिया पर एक ऐसी ही चिड़िया दिख रही है, जो चहचहाने के बजाय भौंक-भौंककर लोगों को हैरान कर रही है। जिस तरह जानवरों को पालने का शौक लोग रखते हैं, वैसे ही कुछ लोगों को चिड़िया पालने का भी शौक होता है । कोई तोता-मैना तो कोई रंग-बिरंगी चिड़ियां को पालकर अपना घर गुलज़ार करता है। वैसे विदेशों में एक ऐसी भी चिड़िया होती है, जो कुों की तरह भौंककर दिखा सकती है। वायरल हो रहे एक वीडियो में चिड़िया बिल्कुल कुों की तरह भौंक रही है। जब तक आप इसे देखते नहीं हैं, तब तक आप समझेंगे कि आवाज़ कु की ही है। जब ये सामने आती है, तब सच पता चलता है। इस चिड़िया को cockatoos कहते हैं। यह पक्षी तोते की फैमिली से ताल्लुक रखता है। Sandiegozoo के मुताबिक, कॉकाटूज़ ऑस्ट्रेलिया में पाए जाते हैं। ये नीलगिरि के पेड़ों से लेकर चीड़ के जंगलों में रहते हैं। वीडियो को सोशल मीडिया के प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर @unilad नाम के अकाउंट पर शेयर किया गया है। यूजर ने कैप्शन दिया है, ये तो अद्भुत है। कुछ ही घंटे पहले अपलोड हुए वीडियो को करीब 16 हजार से ज्यादा लोग लाइक कर चुके हैं, जबकि ढेरों ने मजेदार तरह से रिएट किया है। कुछ ने कहा कि, अच्छा है ये सिर्फ भौंकती है, काटती नहीं। वहीं कुछ यूज़र्स का कहना था कि ये कु की जॉब लेकर मानेगी।

लोक पहल, राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक, मुमुक्षु आश्रम, शाहजहॉपुर, प्रधान संपादक अरूण पाराशरी

लोक पहल हिन्दी साप्ताहिक स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डा. अवनीश कुमार मिश्रा द्वारा शाहजहॉपुर प्रिन्टर्स जज साहब वाली गली, तारीन बहादुरगंज जिला शाहजहॉपुर 242001 से मुद्रित व 160 रोशनगंज लक्ष्मी राईस मिल, शाहजहॉपुर 242001 उ0प्र से प्रकाशित। संपादक—सुयश सिन्हा मो. 9935740205 E-mail : lokpahalspn@gmail.com समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र शाहजहॉपुर होगा।